दिसंबर 2024

₹ 20

समाजवादी बुलेटिन

संघर्षों का समाजवाद

बांधो मुट्ठी

जीतो जंग

R.N.I. No. 68832/97

www.samajwadiparty.in

समाजवाद ही देश में बदलाव ला सकता है। सामाजिक न्याय समाजवाद से ही आ सकता है। संघर्ष ही समाजवादी साथियों की पूंजी है। समाजवादी विचारधारा के विस्तार के लिए लक्ष्य को निर्धारित करते हुए अपने कार्य को निरंतर करते रहना समाजवादियों का कर्तव्य है। एक बेहतर समाज बनाने के लिए निरंतर संघर्ष समाजवादियों की पहचान है।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक, समाजवादी पार्टी

समाजवादी बुलेटिन
दिसंबर 2024
वर्ष 26 | संख्या 02

प्रिय पाठकों,

आपको बधाई एवं हृदय तल से आभार। आपकी प्रिय पत्रिका समाजवादी बुलेटिन अपने रजत जयंती वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। आप सभी के प्यार और उत्साहवर्धन की बदौलत यह संभव हो पाया। समाजवादी बुलेटिन के ढाई दशक के सफर में इसके नए कलेवर को आपने खूब सराहा। हम भरोसा दिलाते हैं कि वैचारिक स्तर पर आपको समृद्ध करने का हमारा प्रयास सतत जारी रहेगा। कृपया अपना स्नेह यूं ही बनाए रखें।

धन्यवाद

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक
प्रोफेसर रामगोपाल यादव
☎ 0522 - 2235454
samajwadibulletin19@gmail.com
bulletinsamajwadi@gmail.com
Mob:- 9598909095
/samajwadiparty

समाजवादी पार्टी के लिए
19, विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित
अवध पब्लिशिंग हाउस, 8 पान दरीबा, लखनऊ से मुद्रित
R.N.I. No. 68832/97

अंदर

संभल की आड़ में ढक रहे कुंदरकी का पाप 32

08 कवर स्टोरी
संघर्षों का समाजवाद
बांधो मुट्ठी, जीतो जंग

नेताजी के पदचिन्हों पर चलने का संकल्प 04

समाजवादी पार्टी के संस्थापक नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव की 85 वीं जयंती 22 नवंबर को समाजवादियों ने उत्तर प्रदेश के सभी जिलों, गांवों-कस्बों में मनाई गई और शिद्दत के साथ नेताजी को याद करते हुए उनके बताए हुए रास्ते पर चलने का संकल्प लिया।

अखिलेश के स्वागत में उमड़ी भीड़ 30
झारखंड में अखिलेश का गर्मजोशी से स्वागत 42

नेताजी के पदचिन्हों पर चलने का संकल्प

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के संस्थापक नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव की 85 वीं जयंती 22 नवंबर को समाजवादियों ने उत्तर प्रदेश के सभी जिलों, गांवों-कस्बों में मनाई गई और शिद्दत के साथ नेताजी को याद करते हुए उनके बताए हुए रास्ते पर चलने का संकल्प लिया।

जयंती पर समाजवादी पार्टी के नेताओं-कार्यकर्ताओं व समर्थकों ने कई कार्यक्रम आयोजित किए। रक्तदान, गरीबों-मरीजों में फल वितरण, असहायों की मदद व भंडारे का आयोजन किया गया। कई जिलों में नेताजी की स्मृति में मुशायरा-व कवि सम्मेलन भी आयोजित किया गया।

जयंती पर नेताजी को कोटि-कोटि नमन करते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा कि नेताजी की जयंती, हम सबके लिए 'समाजवादी मूल्यों' के प्रति अपने संकल्पों को दोहराने का 'शपथ-दिवस' होती है। श्री यादव ने कहा कि आज जन-जन में जो सामाजिक चेतना और जागरूकता आई है, उसकी ज़मीन नेताजी और उनके साथ के

समर्पित लोगों ने ही तैयार की थी।

आज हम सबकी ये ज़िम्मेदारी है कि उनके बोये सैद्धांतिक बीजों और उनके रोपे हुए वैचारिक पौधों को और भी अधिक सकारात्मक वातावरण दें जिससे समानता-समता, सौहार्द और सबकी संवृद्धि का मार्ग प्रशस्त हो सके और विकास की दिशा सब भेदभाव मिटाते हुए, देश के अंतिम व्यक्ति से प्रथम व्यक्ति की ओर हो जाए।

उन्होंने कहा कि नेताजी ने ही हम सबको ये समझाया और सिखाया कि सच्चे लोकतंत्र की सच्ची दिशा नीचे-से-ऊपर की ओर होती है। जब पंक्ति का अंतिम व्यक्ति सशक्त होगा तभी समाज और देश सशक्त होगा। यही 'समाजवादी सकारात्मक, राजनीति' का बुनियादी सिद्धांत है, हम सब आज फिर से नेताजी के संकल्पों-सिद्धांतों पर चलने व उनके लिए लड़ने का वचन उठाते हैं। नेताजी को पुनः नमन और सार्थक स्मरण!

नेताजी की जयंती पर सैफई स्थित उनकी समाधि स्थल पर पार्टी के प्रमुख राष्ट्रीय महासचिव एवं राज्यसभा सदस्य प्रो राम गोपाल यादव ने पुष्पांजलि अर्पित की। बदायूं से सांसद आदित्य यादव समेत बड़ी संख्या में नेताओं एवं कार्यकर्ताओं ने श्रद्धासुमन अर्पित किए। समाधि स्थल पर कार्यरत मजदूरों में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष किरनमय नंदा ने कंबल वितरण किया।

समाजवादी पार्टी के प्रदेश कार्यालय लखनऊ में नेता विरोधी दल माता प्रसाद पाण्डेय, राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल, पूर्व मंत्री ओम प्रकाश सिंह, पूर्व सांसद अरविन्द कुमार सिंह, प्रदेश महासचिव एवं विधायक अताउर्रहमान, समाजवादी शिक्षक सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो बी. पाण्डेय, पूर्व एमएलसी डॉ राजपाल कश्यम, पूर्व एमएलसी, डॉ मधु गुप्ता, पूर्व एमएलसी रामवृक्ष यादव, पूर्व एमएलसी उदयवीर सिंह, पूर्व विधायक मनबोध प्रसाद, पूर्व विधायक सुदामा प्रसाद, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष लखनऊ विजय बहादुर यादव समेत बड़ी संख्या में नेताओं और कार्यकर्ताओं ने नेताजी चित्र पर माल्यार्पण कर नमन किया।

समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय पर ही समाजवादी महिला सभा की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती जूही सिंह, प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती रीबू श्रीवास्तव, स्व जनेश्वर मिश्र की सुपुत्री श्रीमती मीना तिवारी, प्रवेश यादव, श्रीमती सरोज यादव, बीआर पाल, श्रीमती मंगला यादव, डॉ राहुल शुक्ला, सज्जन मिश्रा, रजनीश यादव, मनुरोजन यादव, करुणा निधान प्रजापति, कपिल मुनि यादव,

नेताजी को काव्य नमन

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के संस्थापक नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव की 85वीं जयंती पर 22 नवंबर को समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय लखनऊ में भव्य कवि सम्मेलन एवं मुशायरा का कार्यक्रम आयोजित कर देश के नामचीन कवियों व शायरों ने नेताजी को काव्य पाठ व शेरों के जरिये खास अंदाज में शब्दांजलि पेश की।

कवि सम्मेलन एवं मुशायरा के मुख्य अतिथि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव रहे। इस अवसर पर तमिलनाडु के यादव महासभा के अध्यक्ष जे. रामचंद्रन द्वारा लाई गई नेताजी की प्रतिमा का भी श्री अखिलेश यादव ने अनावरण किया।

कवि सम्मेलन व मुशायरा की अध्यक्षता पूर्व सांसद व प्रख्यात कवि उदय प्रताप सिंह ने की। वरिष्ठ कवियत्री श्रीमती सरिता शर्मा ने सफल संचालन किया। कवि सम्मेलन व मुशायरा में देश के नामचीन और सुविख्यात शायरों और कवियों में सुश्री शबीना अदीब, चरण सिंह बशर, जौहर कानपुरी, सर्वेश अस्थाना, आजाद प्रतापगढ़ी, विष्णु सक्सेना, सुनील जोगी, बिलाल सहारनपुरी, जमुना प्रसाद उपाध्याय, गजेन्द्र प्रियांशु और श्री राजीव निगम ने अपने कलाम पेश किए। कवियों और शायरों ने शब्दों के जरिये खास अंदाज में नेताजी को नमन किया।

कवि सम्मेलन एवं मुशायरे के आयोजन की जिम्मेदारी समाजवादी पार्टी के नेताओं श्रीमती जूही सिंह, श्रीमती मीरा वर्धन, श्रीमती रीबू श्रीवास्तव, सुश्री पूजा शुक्ला, श्री शकील नदवी, मोहम्मद यामीन खान एवं श्री दीपक रंजन ने संभाली। कार्यक्रम में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष किरनमय नंदा, नेता विरोधी दल माता प्रसाद पाण्डेय, राष्ट्रीय महासचिव शिवपाल सिंह यादव, पूर्व मंत्री श्री राजेन्द्र चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल, सांसद धर्मेन्द्र यादव की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

अवलेश कुमार सिंह, जवाहर यादव, मनबोध प्रसाद पूर्व विधायक देवरिया, छोटे लाल यादव, गणेश कुमार सिंह, कमलेश सोनकर, पंकज सैदपुर, लेखराज यादव, जीनत कौसर, शाहीन, आसिया, चंद्रिका यादव, वजीर खान, केरल के प्रभात, बैकुंठ नाथ यादव, चन्द्रशेखर तिवारी, राहुल सिंह बैरिया, मुन्ना अंचल, इं सुनील सिंह यादव, अभिषेक यादव, दीपक यादव, डॉ लल्लन सिंह, हीरालाल यादव, नीरज कुमार यादव, के.के. श्रीवास्तव, डॉ हरिश्चन्द्र, राशिद अली, श्रीमती रिचा यादव, मरगूब कुरैशी, श्रीमती शालू जौहरी, दिलीप कमलापुरी, सुनील यादव आदि ने पुष्पांजलि अर्पित कर नेताजी को नमन किया।

लखनऊ के पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष विजय बहादुर यादव ने राज्य मुख्यालय के मुख्य द्वार पर विशाल भंडारा का आयोजन किया। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी ने नेताजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर भंडारे का शुभारंभ किया। बाद में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने भंडारे में नेताजी के चित्र पर माल्यार्पण किया।

समाजवादी अधिवक्ता सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष कृष्ण कन्हैया पाल ने नेताजी की जयंती पर दिल्ली में गोष्ठी की। वहीं, उच्च न्यायालय लखनऊ परिसर में समाजवादी अधिवक्ता सभा के प्रदेश अध्यक्ष सिकन्दर यादव की अध्यक्षता में जयंती मनाई गई। नेताजी के जन्मदिन पर समाजवादी पार्टी, प्रदेश मुख्यालय के बाहर प्रवक्ता फखरूल हसन चांद, नवीन धवन बंटी और दद्दन खां की ओर से राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी ने गरीबों में कंबल बांटे।

संघर्षों का समाजवाद

बांधो मुट्ठी जीतो जंग

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश की 9 विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनाव में बेईमानी और प्रशासनिक मशीनरी से धांधली कराकर जीत पर इतराने वाली भाजपा समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के हौसले को डिगा नहीं सकी। श्री अखिलेश यादव ने संघर्षों की समाजवादी परंपरा को बदस्तूर जारी रखते हुए बांधो मुट्ठी तानो मुट्ठी का नारा देकर 2027 के विधानसभा चुनाव की जंग जीतने का PDA समाज और सपा कार्यकर्ताओं को लक्ष्य दे दिया है।

इस एक नारे से समाजवादी पार्टी कार्यकर्ता एक बार उत्साह से लबरेज होकर 2027 के लक्ष्य को भेदने में जुट गए हैं। सपा मुखिया के इस आह्वान का संदेश स्पष्ट है कि समाजवादी पार्टी एकता, सद्भाव के साथ सामाजिक न्याय की लड़ाई को और धार देने जा रही है। लिहाजा यह तय है कि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के चट्टानी हौसले और मजबूत इरादे के सामने भाजपा को 2027 में पस्त होना ही होगा।

उपचुनाव में भाजपा ने जिस तरह नंगा नाच

किया उसने उसका चाल, चरित्र और चेहरा एक बार फिर दुनिया के सामने बेपर्दा कर दिया है। बंदूकों की नोंक पर वोट की लूट करने वाली भाजपा सरकार चुनाव नतीजों के बाद इस गुमान में थी कि वह श्री अखिलेश यादव और समाजवादी पार्टी को निराश कर देगी मगर श्री अखिलेश यादव चुनाव नतीजों के बाद जिस तरह डटकर भाजपा सरकार के खिलाफ खड़े हो गए और उन्होंने उपचुनाव की छोटी लकीर को काटने के बजाए 2027 के लिए बड़ी लकीर खींच दी है।

2027 के विधानसभा चुनाव के लिए श्री अखिलेश यादव ने जिस तरह PDA से बांधो मुट्ठी-तानो मुट्ठी का जयघोष करने को कहा, उससे साफ संदेश गया कि श्री अखिलेश यादव बुलंद इरादों और सकारात्मक राजनीति करने वाले राजनेता हैं।

उपचुनाव में सबने देखा कि भाजपा ने किस तरह बेइमानी की। पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों के बूते सभी 9 सीटों पर वोटरों को डराया-धमकाया गया। पिस्टल लेकर सम्मानित मतदाताओं जिनमें महिलाएं भी थीं जिस तरह धमकाया गया उसने भाजपा की जितनी थू-थू कराई, शायद कभी किसी सरकार में ऐसा नहीं हुआ होगा। निहत्थी महिलाओं को पिस्टल की नोंक पर

ललकारते भाजपा सरकार की पुलिस का वीडियाे अभी भी वायरल है। वीडियो में तनी हुई पिस्टल के सामने वोट देने के लिए महिलाओं की जद्दोजहद भी दुनिया ने देखी है।

वोट के अधिकार के प्रति जागरुक महिलाओं को इसीलिए सैल्यूट किया जा रहा है। जाहिर है, महिलाएं भाजपा सरकार के ताबूत में वोट की कील ठोंकने आईं थीं और भाजपा सरकार की पुलिस उसे रोकना चाहती थी।

सीसामऊ, करहल, मीरापुर, मझवां, कटेहरी, गाजियाबाद आदि ऐसी कोई विधानसभा नहीं थी जहां उपचुनाव में भाजपा अपनी लाठी से लोकतंत्र की आवाज को दबाने में न जुटी रही हो। सीसामऊ में तो वोटरों को रोकने के लिए रातोंरात उन रास्तों को जेसीबी मशीन से खुदवा भी दिया गया जिधर से वोटरों को जाना था।

मुस्लिम संप्रदाय के मतदाताओं को घरों से निकलने से रोका गया, यह लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत नहीं है। इससे यह भी स्पष्ट हो गया कि भाजपा का कभी भी लोकतंत्र पर विश्वास नहीं रहा है। वह येन-केन-प्रकारेण सत्ता चाहती है।

पूरी दुनिया को सत्ता के इस भ्रष्टतम आचरण के खिलाफ पूरे प्रदेश में अकेली समाजवादी पार्टी और उसके मुखिया श्री अखिलेश यादव ही लोहा लेते दिखे।

चुनाव नतीजों के बाद श्री अखिलेश यादव ने सामाजिक न्याय की लड़ाई को अब और धार देने की जिस तरह की तैयारी की है, उससे स्पष्ट है कि भाजपा सरकार के दिन लद गए हैं।

भाजपा सरकार के कामकाज और तौर तरीकों ने जनता को निराश किया है। बढ़ती बेरोजगारी, महंगाई से ध्यान हटाने के लिए भाजपा सरकार ने जिस तरह यूपी में सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने की कोशिशें की वह पूरी दुनिया ने बहराइच और फिर संभल में देखा है। यूपी की जनता हमेशा से ही सामाजिक सद्भाव की कायल रही है मगर भाजपा आपसी सौहार्द्र के माहौल में गाहे-बगाहे जहर घोलती रही है।

यह किसी से छिपा नहीं है कि भाजपा राज में हर वर्ग नाराज है,दुखी है और बुरी तरह परेशान है। यूपी की कानून-व्यवस्था पूरी तरह छिन्न भिन्न हो चुकी है। स्वास्थ्य सेवाओं का इससे बुरा हाल क्या होगा कि केजीएमयू जैसे संस्थान में एक मरीज वेंटीलेटर के लिए हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाते हुए मौत के मुंह में

चला गया। किसानों के साथ जिस तरह सरकार में ज्यादती हो रही है, उससे अन्नदाता बिलबिला रहा है। लूट, बलात्कार जैसी घटनाओं से महिलाएं डरी-सहमी हैं।

वक्त का तकाजा है कि अब भाजपा सरकार के खिलाफ उठ खड़ा हुआ जाए। बांधो मुट्ठी, तानो मुट्ठी का यह जयघोष श्री अखिलेश यादव ने सही समय पर किया है क्योंकि किसानों, महिलाओं, युवाओं और बेरोजगारों को अब संघर्ष के बूते ही न्याय दिलाया जा सकता है।

बांधो मुट्ठी, तानो मुट्ठी श्री अखिलेश यादव का एक ऐसा नारा है जोकि जनता के लोकतांत्रिक अधिकारदिलाने की लड़ाई को और धार देगा। यह सभी जानते हैं कि श्री अखिलेश यादव मजबूत इरादों के साथ संघर्षों के समाजवाद की विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। यह उनका तेवर ही था कि उन्होंने PDA को एकजुट कर 2024 के लोकसभा चुनाव में यूपी में भाजपा को करारी शिकस्त दे दी।

जाहिर है कि श्री अखिलेश यादव ने जिस तरह आगे की लड़ाई जारी रखने का ऐलान करते हुए बांधो मुट्ठी, तानो मुट्ठी का लक्ष्य समाजवादी पार्टी कार्यकर्ताओं को दिया है, वह 2027 के विधानसभा चुनाव में मील का पत्थर साबित होगा और भाजपा को ऐतिहासिक हार का सामना करना पड़ेगा।

मुट्ठी बांधकर और तानकर 2027 के विधानसभा चुनाव के लिए जंग का ऐलान कर श्री अखिलेश यादव ने कार्यकर्ताओं को यह भी बता दिया है कि संघर्ष के बल पर ही अत्याचार और अन्याय करने वाली भाजपा सरकार को हटाया जा सकता है। इस नारे पर अमल कर 2027 की जंग तो जीती जाएगी जिसके बाद एक बेहतरीन कल पूरे समाज का इंतजार करता मिलेगा।

उपचुनाव में वोट की लूट

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश की 9 विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनाव में हर हाल में जीत के लिए सत्तारूढ़ भाजपा ने लोकतंत्र का जिस तरह मजाक बनाया, वह एक ऐसा बदनुमा दाग है जिसे भाजपा कभी धुल नहीं पाएगी। उपचुनाव में मतदान के दिन जिस तरह वोटों की लूट के लिए भाजपा ने पुलिस की संगीनों का सहारा लिया और वोटरों को धमकाया, डराया, गोली मारने की धमकी दिलवाई, वह पूरी दुनिया ने देखा।

कुंदरकी सीट पर निरीह महिलाओं को पिस्टल दिखाकर धमकाते इंस्पेक्टर की तस्वीरों, वीडियो ने भाजपा के चेहरे को बेनकाब कर दिया मगर फिर भी भाजपा को शर्म नहीं आई और जनता को धमकाकर जीत हासिल करने के बाद उसे जश्न मनाने में भी हिचक नहीं हुई। पुलिस को आगे कर भाजपा ने उपचुनाव जरूर जीत लिया मगर 2027 में जब चुनाव होंगे तो जनता उसे सबक जरूर सिखाएगी क्योंकि भाजपा का यह कृत्य अब कोई नहीं भूलेगा।

9 सीटों पर उपचुनाव के लिए 20 नवंबर को वोट पड़े। भाजपा ने चुनाव से पहले ही जीत के लिए साजिशें शुरू कर दी थीं। धर्म और जाति के आधार पर जिस तरह चुन-चुनकर इन इलाकों से पिछड़े, दलित व अल्पसंख्यक समुदाय के अधिकारियों-कर्मचारियों को हटाया जा रहा था तो उसकी बदनीयत का पता चल गया था।

ऐसा पहले कभी नहीं हुआ कि अधिकारियों-कर्मचारियों का तबादला धर्म या जाति के आधार पर किया जाए। समाजवादी पार्टी ने उसकी बदनीयत भांप ली थी और चुनाव पूर्व ही चुनाव आयोग में शिकायतें दर्ज कराईं मगर दुर्भाग्यपूर्ण रहा कि चुनाव आयोग ने भी इस बारे में कोई ठोस कार्यवाही नहीं की।

लोकसभा चुनाव 2024 में समाजवादी पार्टी ने अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के रणनीतिक कौशल से यूपी में भाजपा को शिकस्त दे दी थी जिससे भाजपा खासतौर पर मुख्यमंत्री तिलमिला गए थे।

कुर्सी बचाने के लिए मुख्यमंत्री ने किसी भी सूरत में उपचुनाव को जीतने का मंसूबा तैयार किया और सरकारी मशीनरी को आगे कर दिया।

चूंकि अधिकारी-कर्मचारी भी यह जानते थे कि उपचुनाव में जीत-हार से सरकार पर फिलहाल कोई फर्क नहीं पड़ेगा इसलिए वे भी भाजपा के झांसे में आ गए और खुलकर भाजपा प्रत्याशियों का साथ देने लगे। आचार संहिता के नाम पर सपा प्रत्याशियों, समर्थकों को परेशान किया जाने लगा और भाजपा प्रत्याशियों के साथ पुलिस व दूसरे अधिकारियों की मंच पर जाकर समर्थन देने की तस्वीरें भी वायरल होने लगीं।

समाजवादी पार्टी ने भाजपा की बेईमानी, सपा प्रत्याशियों के साथ अधिकारियों का सौतेला व्यवहार की सप्रमाण चुनाव आयोग से शिकायतें की मगर वस्तुत: वह भी निष्क्रिय ही दिखा जिसका नतीजा यह हुआ कि 20 नवंबर को मतदान के दिन सरकारी मशीनरी ने समाजवादी पार्टी के वोटरों पर बंदूकें तान दीं। डराया-धमकाया। वोट देने से उन्हें रोकने में पुलिस वालों ने हर हथकंडा अपनाया। सभी सीटों पर समाजवादी पार्टी के वोटरों को खासतौर पर रोकने के लिए बैरीकेडिंग की गई। चुनाव आयोग के स्पष्ट निर्देशों के बाद भी वोटरों के पहचान पत्र देखे गए। एजेंटों के एतराज करने पर उन्हें भी धमकाया गया।

तमाम बूथों पर दो-दो पर्ची बांटकर वोटरों की पहचान यह बताने के लिए की गई कि कौन पर्ची किस पार्टी के वोटर की है जिससे भाजपा के वोटरों या फर्जी वोटरों को न रोका जाए और समाजवादी पार्टी के वोटरों पर सख्ती की जाए। चुनांचे पूरे चुनाव में सपा के वोटरों पर खूब सख्ती हुई और भाजपा ने वोटों की लूट की।

भाजपा ने मतदान वाले दिन पुलिस से किस तरह वोटरों को रोका इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि 2022 के विधानसभा चुनाव के मुकाबले इस उपचुनाव में इन्हीं 9 सीटों पर मतदान प्रतिशत काफी गिर गया। 2022 में जहां मीरापुर में 68.65 प्रतिशत मतदान हुआ था वहीं 2024 के उपचुनाव में यह घटकर 57.1 प्रतिशत हो गया। कुंदरकी में 71.26 के बजाय 57.7 प्रतिशत, गाजियाबाद में 51.57 प्रतिशत से घटकर 33.3, खैर में 61.89 से कम होकर 46.3 प्रतिशत, करहल में 65.97 से कम होकर 54.1 प्रतिशत, सीसामऊ में 56.88 से घटकर 49.1 प्रतिशत, फूलपुर में 60.09 से घटकर 43.4 प्रतिशत, कटेहरी में 62. 51 से घटकर 56.9 प्रतिशत जबकि मझवां विधानसभा सीट पर 2022 के चुनाव के मुकाबले 61.60 प्रतिशत से घटकर 50.4 प्रतिशत ही मतदान होना यह बताने के लिए काफी है कि मतदान के दिन मतदाताओं ने आखिर दिलचस्पी क्यों नहीं ली। जाहिर है कि पुलिस ने सख्ती बरती इसलिए वोटर या तो लौट गए या जबरिया लौटा दिए गए।

फोटो स्रोत : गूगल

असत्य का समय हो सकता है, युग नहीं

-अखिलेश

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने उपचुनाव के नतीजों के अगले ही दिन पत्रकारों के सामने भाजपा की धांधली का काला चिठ्ठा रख दिया। उन्होंने गिनाया कि किस तरह भाजपा ने चुनाव में धांधली कराई। पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों का किस तरह इस्तेमाल किया गया।

इससे पहले नतीजे वाले दिन सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हुए उन्होंने लिखा, 'इलेक्शन' को 'करप्शन' का पर्याय बनाने वालों के हथकंडे तस्वीरों में क़ैद होकर दुनिया के सामने उजागर हो चुके हैं। देश की जनता ने इस उपचुनाव में चुनावी राजनीति का सबसे विकृत रूप देखा। असत्य का समय हो सकता है लेकिन युग नहीं।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा ने उपचुनाव में सत्ता के दुरुपयोग का नग्न प्रदर्शन किया। संविधान में जनता को मिले लोकतांत्रिक अधिकारों को छीना है। भाजपा ने संविधान और लोकतंत्र को कुचला है। सत्ता के वीभत्स दुरूपयोग से भाजपा ने लोकतंत्र को कलंकित किया है। भाजपा को लोकलाज की भी परवाह नहीं है। वह अहंकार में सत्ता का खुला दुरुपयोग कर रही है। जनता के लोकतांत्रिक अधिकारों को कुचल कर सत्तासीन होने वाली भाजपा ने अक्षम्य अपराध किया है।'

प्रेस कांफ्रेंस में उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग जांच कर ले कि जिनकी उंगलियों पर स्याही का निशान भी नहीं लगा और उनके वोट पड़ गए। जांच हो जाए तो दूध और पानी अलग-अलग हो जाएगा कि किस तरह धांधली की गई। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि लोकतंत्र में सच्ची जीत लोक से

होती है, तंत्र से नहीं। जिस जीत के पीछे छल होता, वह दिखावटी जीत एक छलावा होती है, जो सबसे ज्यादा उसी को छलती है जिसने छल करके जीत का नाटक रचा है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा का हारने का डर तो उसी दिन साबित हो गया था, जिस दिन उसने PDA के अधिकारियों-कर्मचारियों को चुनाव से हटा दिया था। जिससे भाजपा के अपने लोग वहां सेट किए जा सकें और धांधली की गवाही देने वाला कोई न हो। हमने तो भाजपा की बदनीयत को समझ कर तब ही विरोध किया था लेकिन जब शासन-प्रशासन ही दुशासन बन जाए तो लोकतंत्र के चीर हरण को कौन रोक सकता है।

श्री यादव ने कहा कि जिनकी उंगलियों पर निशान नहीं है, उनके भी वोट डाले गये हैं। चुनाव आयोग अपने दस्तावेजों में देखे कि जिनका नाम दर्ज है वे बूथ तक पहुंचे भी या नहीं। सब दूध का दूध, पानी का पानी हो जाएगा। कुंदरकी विधानसभा उपचुनाव में दो तरह की मतदाता पर्चियां बांटी गईं। एक मतदाता सूचना पर्ची सामान्य किस्म की थी जबकि दूसरी पर्ची लाल लाइन से घिरी हुई थी, इसमें पहले मतदान फिर जलपान की भी हिदायत थी। लोकतंत्र की यह कलंक कथा किसी को भी शर्मसार कर सकती है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि यह नए जमाने की 'इलेक्ट्रॉनिक बूथ कैप्चरिंग' का मामला है। जो कोर्ट की निगरानी में होने वाली मतगणना में कैमरे के सामने हेराफेरी कर सकते हैं, वे अपने लोगों के बीच बूथ के बंद कमरे में क्या नहीं कर सकते। अगर PDA के अधिकारी-कर्मचारी बदलकर धांधली न की होती तो भाजपा एक भी सीट के लिए तरस जाती, जैसा कि लोकसभा चुनाव में हुआ था।

श्री यादव ने कहा कि एक देश तब एक लोकतांत्रिक क्रांति की ओर बढ़ने लगता है जब उसे कहीं से भी इंसाफ की उम्मीद दिखाई नहीं देती। मंहगाई, बेरोजगारी-बेकारी और चुनावी धांधली से आक्रोशित समाज एक सीमा तक ही सहता है। भाजपा संविधान से लेकर आरक्षण तक सबको खत्म करने पर उतारू है, ऐसे में भला उसे वोट कौन देगा।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि चुनाव के दिन जब निहत्थों पर बंदूक तानी गयी तो भाजपा की कमजोरी सारी दुनिया के सामने आ गयी। एक साहसी महिला ने जिस समय अपने वोट देने के अधिकार का कागज बंदूक के सामने तान दिया था, भाजपा उसी समय हमेशा के लिए हार गई थी। लोकतंत्र में ऐसा तमाचा आज तक किसी ने नहीं मारा जिसकी गूंज भाजपाइयों को रात में सोने नहीं देगी।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा सोच रही है कि इन परिणामों से PDA हताश होगा तो वह गलत सोच रही है। अन्याय और उत्पीड़न लोगों को तोड़ता नहीं जोड़ता है। हमने पहले भी कहा है आज फिर कह रहे हैं कि सदियों से PDA समाज का जो उत्पीड़न और अपमान प्रभुत्ववादियों ने किया है, उसका दर्द PDA ही समझ सकता है। PDA दर्द का रिश्ता है। यही दर्द PDA को लगातार जोड़ रहा है, ये एकता ही भाजपा की चिंता का सबसे बड़ा विषय है। भाजपा की बुनियाद हिल चुकी है।

लोक के लिए तंत्र से खूब लड़े समाजवादी

फोटो स्रोत : गूगल

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश में 9 सीटों पर हुए विधानसभा उपचुनाव में दुनिया ने दो तस्वीरें देखीं, एक भाजपा की बेईमानी और दूसरी समाजवादियों का संघर्ष करने का जुनुन। सरकार का पूरा तंत्र उपचुनाव में धांधली पर आमादा था मगर समाजवादी लोकतंत्र बचाने के लिए डटकर मैदान में खड़े रहे। भाजपा से दिखाने के लिए नूराकुश्ती कर रहे दूसरे दलों ने भी उपचुनाव में भाजपा की मदद करने में समाजवादी पार्टी की राह रोकने की कोशिश की मगर अंत तक अगर भाजपा से कोई लड़ा तो वह समाजवादी ही थे। नतीजों से ही यह स्पष्ट भी हाे गया क्योंकि सपा ने करहल और सीसामऊ सीटों पर जीत का परचम भी लहराया।

समाजवादियों के लड़ने, डटे रहने का ही नतीजा रहा कि सभी सीटों पर भाजपा से सीधा मुकाबला समाजवादी पार्टी का ही हुआ। लोकसभा चुनाव के बाद इस उपचुनाव ने भी यह मुहर लगा दी कि यूपी में भाजपा को रोकने का माद्दा सिर्फ और सिर्फ

समाजवादी पार्टी और उसके मुखिया श्री अखिलेश यादव में है। बाकी दल भाजपा की मदद के लिए मैदान में आते हैं।

उपचुनाव जीतने के लिए भाजपा ने जितना नंगा नाच किया, वह दुनिया ने कैमरों की आंखों से देखा। इसके साथ एक और पर्दा हट गया कि लोकसभा चुनाव में भी अगर सरकारी तंत्र ने भाजपा की मदद न की होती तो यूपी से उसका सफाया हो जाता और समाजवादी पार्टी सभी सीटों पर अपना परचम लहराती।

इस उपचुनाव में तमाम दलों की भी कलई खोल दी। कुछ ऐसे दल भी समाजवादी पार्टी की राह रोकने और भाजपा की मदद में मैदान में आ गए जोकि हमेशा ही उपचुनाव से किनारा कसते रहे हैं। वोटरों को भी यह पता चल गया कि जब सरकार अपने तंत्र के बूते चुनाव लड़ रही है तो यह दल मैदान में क्यों आए। चर्चाएं आम हो गईं कि ये लोग समाजवादी पार्टी को नुकसान पहुंचाने के इरादे से उपचुनाव में कूदे हैं। जाहिर है, नुकसान सपा को होगा तो फायदा किसे पहुंचेगा? यह ऐसा सवाल था कि जिसका जवाब एक ही था-भाजपा को फायदा पहुंचाने के लिए ये दल मैदान में हैं।

सरकार का पूरा तंत्र भाजपा प्रत्याशियों को मदद पहुंचा रहा था। प्रचार के दौरान समाजवादी पार्टी के उम्मीदवारों व समर्थकों को बेवजह रोकटोक का सामना करना पड़ रहा था मगर वे मैदान में डटे रहे। कुंदरकी, मीरापुर, सीसामऊ, करहल आदि सीटों पर जिस तरह वोटरों के खिलाफ साजिशें की गईं, वे बेपर्दा हो गईं।

समाजवादियों के साथ लोक यानी जनता थी इसलिए वे भी तंत्र से लड़ते रहे। मैदान में डटे रहे। कुंदरकी हो या सीसामऊ, समाजवादियों ने प्रशासन व पुलिस का बंदूकों की नोंक पर भी बिना डरे मुकाबला किया। जिस दल के खिलाफ सरकारी मशीनरी लगी हो, कई राजनीतिक दल भाजपा की मदद में आ गए हों, उससे लड़ना कोई आसान काम नहीं होता मगर समाजवादियों ने किसी भी सीट पर भाजपा को एकतरफा जीत हासिल नहीं करने दी।

सभी सीटों पर समाजवादी पार्टी ही भाजपा से सीधा लड़ी और जनता ने दूसरे दलों को पूरी तरह नकारते हुए संदेश दे दिया कि भाजपा से लड़ने की कूवत सिर्फ समाजवादी पार्टी में है। जिस तरह समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता चुनाव में डटे रहे, इससे स्पष्ट है कि 2024 के विधानसभा चुनाव में कार्यकर्ता भाजपा सरकार को उखाड़ फेंकेंगे क्योंकि पीडीए अब एकजुट हो चुका है।

करहल ने फिर जताया सपा पर भरोसा

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार ने विधानसभा उपचुनाव में और सीटों की तरह ही करहल में भी पुलिस बल के जरिये वोटरों को रोकने-धमकाने की कोशिश की मगर समाजवादी परिवार पर भरोसा रखने वाली करहल की जनता ने सरकार के नापाक मंसूबों को नाकाम करते हुए समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी तेज प्रताप यादव के सिर पर जीत का सेहरा पहना ही दिया।

मैनपुरी जिले की करहल विधानसभा की इस सीट से एक बार फिर समाजवादी पार्टी को जिताकर वोटरों ने स्पष्ट संदेश दे दिया कि यह भूमि समाजवादियों की ही है और उसमें किसी को सेंध लगाने की अनुमति नहीं है। करहलवासियों ने समाजवादी पार्टी को जीत दिलाकर श्री अखिलेश यादव पर ही अपना भरोसा जता दिया।

यूपी की जिन 9 विधानसभा सीटों पर 20 नवंबर को मतदान हुए उसमें मैनपुरी की करहल विधानसभा भी थी। यहां समाजवादी पार्टी ने श्री तेज प्रताप यादव को प्रत्याशी बनाया था। चुनाव में नामांकन के साथ ही तय हो गया था कि तेज प्रताप यादव की जीत पक्की है। भाजपा भी यह जानती थी पर उसने पूरे चुनाव भर साजिशें की और धांधली के लिए कोई भी कोर कसर नहीं छोड़ी। यूपी में सत्तासीन भाजपा ने सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग करने का हर हथकंडा अपनाया पर इस इलाके के वोटरों को वह डिगा नहीं सकी।

मतदान वाले दिन करहल में भी पुलिस ने तमाम रुकावटें डालीं। मतदाताओं को डराने-धमकाने की कोशिशें की।

समाजवादी पार्टी चुनाव आयोग से लगातार शिकायतें करती रही मगर उसकी कहीं भी सुनवाई नहीं हो रही थी। करहल के वोटर जान गए थे कि भाजपा इस सीट पर भी खेल

करने की जुगत में है मगर वे सभी समाजवादी पार्टी के साथ डटकर खड़े हो गए। मतदान के दिन वोटरों को रोकने की तमाम कोशिशें हुईं जिस वजह से मतदान प्रतिशत में गिरावट हुई मगर वोटरों ने ठान रखी थी कि वे तेज प्रताप को जिताकर ही मानेंगे।

पुलिस की ज्यादती का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि 2022 के आम चुनाव में जहां इस सीट पर 65.5 प्रतिशत मतदान हुआ था, उपचुनाव में 10 प्रतिशत की गिरावट आई और पुलिस की रोकटोक की वजह से उपचुनाव में 54.1 प्रतिशत ही मतदान हो पाया।

पुलिस की लाख कोशिशों के बावजूद आखिरकार करहल की जनता जीत गई। 23 नवंबर को जब नतीजे आए तो वही हुआ जोकि करहल की जनता ने चाहा और यहां भाजपा सरकार की करारी शिकस्त हुई और फिर समाजवादी परचम लहरा दिया गया।

करहल की इस सीट पर श्री अखिलेश यादव के इस्तीफा देने के कारण चुनाव हुआ था। श्री अखिलेश यादव ने लोकसभा चुनाव 2024 में कन्नौज से सांसद चुने जाने के बाद यह सीट छोड़ी थी। उपचुनाव में तेज प्रताप यादव को प्रत्याशी बनाया गया था।

करहल सीट से समाजवादी परिवार को बहुत पुराना नाता है। समाजवादी पार्टी के संस्थापक नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव ने इसी सरजमीं से राजनीति के दांवपेंच सीखे थे। उनके राजनैतिक गुरु नत्थू सिंह यहीं से चुनाव लड़ते थे और बाद में जसवंतनगर सीट से चुनाव लड़े। फिर उन्होंने यह सीट श्री मुलायम सिंह यादव के लिए छोड़ दी थी। नत्थू सिंह ने 1967 के विधानसभा चुनाव में श्री मुलायम सिंह यादव को चुनाव मैदान में उतारा और वह पहली बार विधायक बने थे। श्री अखिलेश यादव के पैतृक गांव सैफई से महज चार किलोमीटर की दूरी पर स्थित करहल के लोगों का स्नेह ही है कि इस सीट पर 1985 से ही समाजवादी परिवार पर उन्हें भरोसा है। 1989, 1991, 1993, 1996, 2000, 2007, 2012, 2017 व 2022 के चुनाव में भी समाजवादी पार्टी का परचम लहराया। करीब 32 साल तक समाजवादी पार्टी पर करहल वासियों का भरोसा बताने के लिए काफी है कि करहल का समाजवादी परिवार से कितना मजबूत रिश्ता है। यह ऐस रिश्ता है जोकि अटूट है और कभी भी इसमें सेंधमारी नहीं हो सकती है। समाजवादी परिवार ने भी हमेशा ही करहल को सिर माथे पर रखा। करहल के लोगों के लिए समाजवादी परिवार भी मजबूती के साथ डटा रहता है।

करहल में कामयाब रही डिंपल जी की रणनीति

बुलेटिन ब्यूरो

मैनपुरी की सांसद श्रीमती डिंपल यादव ने करहल विधानसभा उपचुनाव में जीत की इबारत लिखने में राजनीतिक परिपक्वता की मिसाल कायम कर दी। अपने खास रणनीतिक कौशल से उन्होंने उपचुनाव में पूरी भाजपा सरकार और सरकारी मशीनरी की चालों को नाकाम कर दिया। डिंपल जी की लोकप्रियता की वजह से करहल में भाजपा पस्त हो गई।

श्रीमती डिंपल यादव न सिर्फ मैनपुरी बल्कि देश-प्रदेश में अपनी सादगी, सरलता के लिए एक अलग और अमिट पहचान रखतीं हैं। राजनीतिक विरोधी भी उनकी सादगी के कायल हैं। मैनपुरी में नेताजी की राजनीतिक विरासत संभाल रहीं श्रीमती डिंपल यादव ने मैनपुरी की जनता में एक अलग ही पहचान बना रखी है। बुजुर्गों, महिलाओं और युवाओं में वह अपनी सादगी की वजह से वह काफी लोकप्रिय हैं। बुजुर्गों और महिलाओं का सम्मान और युवाओं को स्नेह की वजह से कोई उनकी बात टालता नहीं है। सांसद से पहले यहां के लोग उन्हें बहू-बेटी की तरह मानते हैं।

करहल विधानसभा सीट पर उपचुनाव की घोषणा हुई तो समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी के लिए श्रीमती डिंपल यादव मैनपुरी में ही डट गईं। वह जानती थीं कि यूपी में भाजपा की सरकार है और वह बड़े पैमाने पर धांधली करने से बाज नहीं आएगी इसलिए नामांकन के पहले से ही उन्होंने करहल में डेरा डाल दिया और पार्टी के चुनाव प्रचार की कमान संभाल ली।

करहल में उन्होंने दिन-रात एक कर दिए। एक-एक गांव पहुंचीं। सभाएं कीं। बैठकें कीं। यहां श्रीमती डिंपल यादव अपने चिरपरिचित सादगी और सरलता भरे

अंदाज में लोगों से मिलतीं तो उसकी अलग छाप पड़ती। आत्मीय संवाद से उन्होंने फिर वोटरों का व्यापक समर्थन पाया। बतौर सांसद वह मैनपुरी के चप्पे-चप्पे से वाकिफ हो चुकी हैं और लोगों से उनका सीधा संवाद है। सांसद चुने जाने के बाद वह मैनपुरी के लोगों के संपर्क में रहती हैं और उनके दुख-दर्द को साझा करती हैं। विकास योजनाओं पर बात करती हैं और मैनपुरी की तरक्की के लिए प्रयासरत रहती हैं इसलिए उनकी लोकप्रियता काफी बढ़ी है।

करहल में चुनाव प्रचार की कमान डिंपल जी के हाथ में थी लिहाजा कार्यकर्ताओं का उत्साह भी बढ़ा हुआ था। श्रीमती डिंपल बूथवार समीक्षा करतीं और कहीं भी गड़बड़ी या कमी की सूचना मिलती तो वहां पहुंच जातीं। उनकी सक्रियता की वजह से प्रशासनिक मशीनरी भी धांधली करने से पहले 100 बार सोचती। कहीं भी सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग होने पर पार्टी के स्तर से श्रीमती डिंपल चुनाव आयोग में शिकायत करातीं। नतीजा, मतदान आते-आते, मशीनरी भी दुरुपयोग करने से पीछे हटने लगी और उतनी धांधली नहीं कर पाई जितनी दूसरी विधानसभा सीटों पर उसने की।

चूंकि लोकप्रिय सांसद श्रीमती डिंपल यादव खुद ही चुनाव प्रचार में लोगों के बीच मौजूद रहीं इसलिए जनता का भी उत्साह बढ़ा हुआ था। बुजुर्गों के आशीर्वाद और महिलाओं के बीच आत्मीय संवाद और युवा कार्यकर्ताओं के बूते श्रीमती डिंपल यादव ने समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी तेज प्रताप यादव के सिर पर जीत का सेहरा बांध दिया।

सीसामऊ में जुल्म के खिलाफ जनादेश

बुलेटिन ब्यूरो

कानपुर की सीसामऊ सीट की जनता ने दुबारा केवल समाजवादी पार्टी पर भरोसा ही नहीं जताया बल्कि प्रदेश की भाजपा सरकार की उस पूरी ताकत को भी धूल चटा दी जोकि उसने उपचुनाव में लगा रखी थी।

इस सीट पर समाजवादी पार्टी प्रत्याशी नसीम सोलंकी की जीत की पटकथा तो समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने उसी वक्त लिख दी थी जबकि उन्होंने नसीम सोलंकी को टिकट देने का ऐलान किया था। सीसामऊ की जनता ने समाजवादी पार्टी को जिताकर भाजपा सरकार को यह स्पष्ट संदेश भी दे दिया कि उसने विधायक इरफान सोलंकी पर जुल्म ढहाये हैं और सीसामऊ की जनता जुल्म, अत्याचारी सरकार का साथ नहीं दे सकती।

सीसामऊ सीट से समाजवादी पार्टी विधायक इरफान सोलंकी पर भाजपा सरकार ने इतना जुल्म ढहाया कि उनकी सदस्यता भी चली गई। मुकदमे पर मुकदमे लगाने से सीसामऊ की जनता भी तिलमिला रही थी। उसे, मौके का इंतजार था। कानूनी प्रक्रिया के तहत इरफान सोलंकी सदस्यता रद्द होने पर उपचुनाव का ऐलान हुआ तो जनता को भाजपा को सबक सिखाने का मौका मिल गया। वह पहले दिन से ही भाजपा को शिकस्त देने के लिए बेताब हो गई।

सीसामऊ की जनता के गुस्से को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव भांप रहे थे। इस सीट पर कई दावेदार थे मगर श्री यादव ने इरफान सोलंकी की पत्नी नसीम सोलंकी से बात की। श्री यादव ने उनके नाम की घोषणा की तो वह प्रचार में

जुट गईं। श्री अखिलेश यादव प्रचार के दौरान उनका हौसला बढ़ाते रहे। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव श्री शिवपाल सिंह यादव ने भी उनके चुनाव प्रचार प्रबंधन की ऐसी व्यवस्था की कि भाजपा की साजिशें ढह गईं।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने सभा के जरिये मतदाताओं को भाजपा सरकार के इरफान सोलंकी पर हुए जुल्म का हिसाब लेने का आह्वान कर बाजी पलट दी और अंतत: तमाम धांधली, बेईमानी के बाद भी भाजपा की हार हो गई।

सीसामऊ की सीट को भाजपा सरकार ने अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया था। सरकार के कई वरिष्ठ मंत्री यहां डेरा डाले हुए थे। मुख्यमंत्री, उप मुख्यमंत्री भी आते-जाते रहे। सरकारी अधिकारियों-कर्मचारियों पर बहुत दबाव था। उन्होंने भी भाजपा की मदद करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

मतदान के दिन समाजवादी पार्टी के वोटरों के गढ़ में जेसीबी से रास्तों को खुदवाकर उसे बंद कर दिया ताकि समाजवादी पार्टी के वोटर दो किमी दूर से आने के बजाय लौट जाएं मगर जनता ने भाजपा को शिकस्त देने की ठान ली थी इसलिए वे तकलीफ सहकर, दूरी तय कर मतदान स्थल पर पहुंचे और वोट की ताकत से भाजपा सरकार के जुल्म के खिलाफ जनादेश देते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के सोलंकी परिवार पर किए भरोसे और रणनीति पर भी अपनी मुहर लगा दी। सपा की विजयी प्रत्याशी नसीम सोलंकी को विधानसभा अध्यक्ष ने विधायक पद की शपथ दिलाई

संदेह के घेरे में चुनाव और उपचुनाव

अरुण कुमार त्रिपाठी
वरिष्ठ पत्रकार

हाल में आई युआल नोवा हरारी की पुस्तक `नेक्सस' ने सूचनाओं के अतीत, वर्तमान का जो वर्णन किया था और भविष्य के बारे में जो आशंकाएं जताई थीं वह भारत की चुनाव प्रणाली में सही साबित हो रही हैं। सूचनाओं के इतिहास को परिभाषित करते हुए हरारी ने इस पुस्तक में बताया है कि अतीत में अगर सूचनाओं ने किसी सेना की विजय और राष्ट्र की स्थापना में सहायता की तो किसी संप्रदाय विशेष को लांछित करने का भी काम किया।

वे सूचनाएं इस दौर में भी दंगा कराने, उन्माद फैलाने और दो राष्ट्रों के बीच तनाव पैदा करने का कारण बन रही हैं लेकिन सूचनाएं अब मनुष्य के हाथों से निकल कर आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस यानी मशीन के हाथों में जा चुकी हैं। हालांकि काफी हद तक अभी भी मनुष्य ही उसे नियंत्रित कर रहा है लेकिन जल्दी ही वह दौर आने वाला है कि मशीनें उनका नियंत्रण मनुष्य के हाथों से छीन सकती हैं।

इन खतरों के बीच उन लोगों के तर्क चुनौतियों से घिर गए हैं जो कहते हैं कि गलत

सूचनाओं या अधूरी सूचनाओं से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि थोड़े इंतजार के बाद उन्हें काटने वाली सूचनाएं आने वाली होती हैं। लेकिन ऐसा तभी हो सकता है जब सत्ताओं का व्यवहार लोकतांत्रिक हो। जब सत्ताधीशों का वर्ताव सही सूचनाओं को दबाने और गलत सूचनाओं के आधार पर लोकतंत्र का भविष्य निर्धारित करने का हो गया हो तो लोकतंत्र को खतरे में ही समझना चाहिए।

हरारी ने सूचनाओं में की जाने वाली हेराफेरी से सिर्फ तानाशाही का खतरा ही नहीं बताया है उन्होंने इसे सभ्यतामूलक खतरे के रूप में चिन्हित किया है। उनका कहना है कि आने वाले समय में सूचनाएं होमोसेपियंस का अस्तित्व ही समाप्त कर सकती हैं क्योंकि सूचनाओं को जब मशीनें संचालित करेंगी तो मानव विवेक और प्रज्ञा का विकास रुक जाएगा। सूचनाएं ज्ञान का निर्माण करती हैं और ज्ञान से प्रज्ञा निर्मित होती है लेकिन विवेक और प्रज्ञा का निर्माण गलत सूचनाओं से नहीं होता। गलत सूचनाओं से भ्रम पैदा होता और हिंसा होती है।

गलत सूचनाएं और उनसे निकलने वाले डाटा ने हमारी सभ्यता को घेर लिया है। उसी का परिणाम हम भारत को चुनावों में भी देख रहे हैं। जनता को वही सूचनाएं दी जा रही हैं जो सत्ताधारी वर्ग और कॉरपोरेट जगत का हित साधें। सत्ताधारी वर्ग जहां सूचनाओं का इस्तेमाल अपनी सत्ता को मजबूती प्रदान करने के लिए करता है वहीं कॉरपोरेट उसका इस्तेमाल अपना मुनाफा और पूंजी बढ़ाने के लिए करता है। एक तरह से दमन और लूट की चाकरी में सूचनाएं लग गई हैं।

महाराष्ट्र विधानसभा और उत्तर प्रदेश का उपचुनाव इस बात का प्रमाण है कि किस प्रकार पूरी प्रणाली की निष्पक्षता को दांव पर लगाकर चुनाव जीते और जितवाए जाते हैं। इन चुनावों के बाद एक ओर महाराष्ट्र में भाजपा को अप्रत्याशित सफलता मिली तो दूसरी ओर उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की जो साख लोकसभा चुनाव में धूल धूसरित हो गई थी उसे बचा लिया गया बताया जा रहा है।

महाराष्ट्र विधानसभा और उत्तर प्रदेश का उपचुनाव इस बात का प्रमाण है कि किस प्रकार पूरी प्रणाली की निष्पक्षता को दांव पर लगाकर चुनाव जीते और जितवाए जाते हैं

उत्तर प्रदेश में नौ सीटों पर विधानसभा के उपचुनाव हुए थे जिनमें भाजपा और उसके सहयोगी दल आरएलडी ने सात सीटें जीत लीं और सपा को दो सीटों पर कामयाबी मिली। करहल और सीसामऊ में सपा को जीत मिली है लेकिन कुंदरकी जैसी सीट पर जहां सपा पिछले आठ चुनावों से कभी नहीं हारी वहां सपा को हराया जाना यह प्रमाणित करता है कि धांधली हुई है।

सवाल यह है कि जिस समाजवादी पार्टी की छह माह पहले लोकसभा चुनाव में प्रदेश में इतनी जबरदस्त लहर थी कि उसे 37 सीटों पर जीत मिली, कैसे वह उपचुनाव में इतना बुरा प्रदर्शन कर सकती है। निश्चित रूप से यही सवाल महाराष्ट्र के विधानसभा चुनाव को भी लेकर किया जा सकता है। वहां इंडिया गठबंधन को लोकसभा में 48 में से 30 सीटें मिली थीं। लेकिन विधानसभा में भाजपा और उसके सहयोगी दलों को दो तिहाई बहुमत हासिल हो गया और महाविकास अघाड़ी पचास पर सिमट गया। पिछले तीन दिसंबर को महाराष्ट्र में विपक्ष का प्रतिनिधिमंडल चुनाव आयोग से मिला और उसने महाराष्ट्र चुनाव में धांधली की जोरदार शिकायत की। प्रतिनिधिमंडल का कहना था कि लोकसभा और विधानसभा चुनावों में मतदान के प्रतिशत में अंतर होता है लेकिन इतना ज्यादा अंतर नहीं आता जितना इस बार देखा गया। सन 2019 में महाराष्ट्र में लोकसभा और विधानसभा के चुनाव में छह महीने का अंतर था लेकिन मतदान सिर्फ दो प्रतिशत बढ़ा था। इस बार आश्चर्यजनक रूप से यह प्रतिशत 13 तक बढ़ गया। दोनों चुनावों के बीत 75 लाख मतदाता बढ़े।

आंकड़ों की इस विसंगति के बारे में आयोग के पास साफ तौर पर कोई जवाब नहीं है। महज आश्वासन है कि हम शिकायतों पर गौर करेंगे। इस दौरान दो चुनावों के बीच मतदाता सूची में 39 लाख लोग बढ़ गए और दूसरी ओर तमाम लोग निकाले गए। विपक्ष ने आरोप लगाया कि कई क्षेत्रों में तो 10,000 तक अतिरिक्त लोग जोड़े गए।

इसे हम चुनाव जीतने की पटकथा कह सकते हैं या भाजपा की भाषा में टूल किट कह सकते हैं। इसीलिए ईवीएम, वीवीपैट और मतदाता सूची पर संदेह गहराता जा रहा है। सिटीजन कमीशन आन इलेक्शन के पूर्व अध्यक्ष और सुप्रीम कोर्ट के

फोटो स्रोत : गूगल

न्यायमूर्ति रहे जस्टिल मदन बी लोकुर का कहना हैकि ईवीएम का मुद्दा आज भी जिंदा है। वह सुप्रीम कोर्ट के फैसलों के बाद भी समाप्त नहीं हुआ है।वे इसमें व्यापक सुधार की जरूरत बताते हैं ताकि चुनाव प्रणाली की विश्वसनीयता बहाल हो। पूर्व प्रशासनिक अधिकारी एमजी देवसहायम का कहना है कि चुनाव सिर्फ निष्पक्ष होना नहीं चाहिए बल्कि निष्पक्ष दिखना भी चाहिए। ईवीएम और वीवीपैट पर संदेह हो और उस पर केस चले ऐसा लोकतंत्र के हित में कतई नहीं है।

आयोग के अधिकारियों का कहना है कि हैकिंग, टेंपरिंग और फर्जी वोटों के डालने के विरुद्ध ईवीएम कोई गारंटी नहीं प्रदान करता। न ही वीवीपैट प्रणाली मतदाताओं को वोट डालने के बाद यह सुनिश्चित करने का अवसर देता है कि उसका वोट वहीं पड़ा है जहां वह डालना चाहता था जबकि मतदाता को यह अधिकार होना चाहिए कि वे यह दरियाफ्त कर सकें कि उनका वोट उनकी मर्जी के मुताबिक पड़ गया है। चुनाव आयोग ने हर ईवीएम के साथ वीवीपैट जोड़ तो दिया है लेकिन वह महज बाइस्कोप होकर रह गया है।

इसमें कुछ सेकेंड के लिए एक पेपर स्लिप आती है और वह गायब हो जाती है। वीवीपैट की गिनती भी नहीं होती जबकि होना यह चाहिए कि वीपीपैट मतदाता के हाथ में आए और वह उसे देखने के बाद एक अलग बक्से में डाले। बाद में उस बक्से की पर्चियों की गिनती की जाए। इसके अलावा यह भी व्यवस्था की जानी चाहिए कि वे पर्चियां पांच साल तक सुरक्षित रखी जाएं।

सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते हस्तक्षेप के बाद पूरी दुनिया की चुनाव प्रणाली पर संदेह व्यक्त किया जा रहा है। जनमत को झांसे में डालने के साथ प्रणाली को ही हैक करने के उदाहरण सामने आ रहे हैं। ब्रिटेन में ब्रेग्जिट से लेकर अमेरिका तक में 2016 के चुनाव में यह आरोप लगे हैं। सोशल मीडिया की भूमिका भी संहेदास्पद है। लेकिन यूरोप और अमेरिका में ईवीएम प्रणाली नहीं है। वहां बैलेट पेपर से मतदान होते हैं। ईवीएम के बारे में एक्स के चेयरमैन एलेन मस्क ने भी संदेह जताते हुए कहा है कि इसे हैक किया जा सकता है।

लेकिन भारत में ईवीएम के भक्तों का एक संप्रदाय पैदा हो गया है। जो कहता है कि विपक्ष जब चुनाव हारता है तो ईवीएम पर शक करता है और जब जीत जाता है तो खामोश हो जाता है। ईवीएम लागू करने का दोष कांग्रेस पार्टी पर भी जाता है। लेकिन ईवीएम उस समय कारगर भी हो सकती है जब चुनाव आयोग निष्पक्ष हो। अगर टीएन

शेषन जैसा सख्त और ईमानदार प्रशासक हो तो ईवीएम सही काम करती है।

दुनिया भर में लोकतंत्र पर मंडरा रहे संकट के बारे में पिछले कुछ सालों में कई पुस्तकें आई हैं। लेकिन जिन दो किताबों की बड़ी चर्चा है वे हैं डेविड रैन्सीमैन की `हाउ डेमोक्रेसी इंड्स' और डैनियल जिबलाट की `हाउ डेमोक्रेसीज डाइ'। इन किताबों में एक दलील तो यह है कि लोकतंत्र अब तमाम बीमारियों का शिकार हो गया है और उन बीमारियों के इलाज के लिए स्वतंत्र चिंतन नहीं हो पा रहा है।

उनके कहने का एक अर्थ यह भी है कि अब लोग भी लोकतंत्र से ऊबने लगे हैं। दूसरी दलील यह है कि राजनीतिक और कॉरपोरेट समूह मिलजुलकर लोकतंत्र को समाप्त करने या सत्ता पर येन केन प्रकारेण ऐसी तरकीब निकाल रहा है जिससे राज्य पर उनकी पकड़ स्थायी रूप से बनी रहे।

उन तरीकों में अल्पसंख्यकों का नाम वोटर लिस्ट से निकाल देना, उन्हें मतदान केंद्रों तक न पहुंचने देना, उनकी नागरिकता पर सवाल खड़े करना, चुनाव हारने के बाद भी हार न मानना, विपक्षी दलों को सरकारी एजेंसियों के माध्यम से धमकाना, चुनाव हारने के बाद सत्ता में आने वाला समूह पर धन और बल से दबाव डालकर उसमें तोड़फोड़ करना आदि शामिल हैं। हालांकि उन पुस्तकों में भारत का अधिक जिक्र नहीं है लेकिन भारत में इन सभी तरीकों का इस्तेमाल किया जा रहा है जिनका जिक्र उन पुस्तकों में है।

भारत में यह कहने वाले हैं कि यह धांधली पहले भी होती थी। इसलिए आज हल्ला मचाने का क्या मतलब है। लेकिन अगर वह धांधली इतने बड़े पैमाने पर होती तो न तो उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री त्रिभुवन नारायण सिंह उपचुनाव हारते और न ही इंदिरा गांधी और उनकी पार्टी 1977 में लोकसभा का आमचुनाव हारतीं। इसके अलावा एक तथ्य यह भी है कि सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग करने के आरोप के तहत इंदिरा गांधी जैसी शक्तिशाली नेता और प्रधानमंत्री का चुनाव भी हाईकोर्ट ने रद्द कर दिया था।

आज तीन तरह की मांगें की जा रही हैं विपक्षी दलों और नागरिक समूहों की ओर से। एक मांग है ईवीएम में सुधार की। दूसरी मांग है ईवीएम की जगह पर बैलेट पेपर से चुनाव कराने की। तीसरी मांग है चुनाव आयुक्त की नियुक्ति की प्रक्रिया बदलने की

आज सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग पर आयोग कोई कार्रवाई करेगा इसकी कल्पना ही नहीं हो सकती। पहले धांधली चंद स्थानों पर होती थी और उनका दायरा व्यक्तिगत होता था। आज धांधली बड़े पैमाने पर होती है और उसे संस्थागत रूप दिया जा चुका है। जिस प्रकार पहले के भ्रष्टाचार को पकड़ा जा सकता और कार्रवाई भी होती थी। आज सत्ताधारी दल के भ्रष्टाचार को न तो पकड़ा जा सकता है और न ही कार्रवाई की जा सकती है।

आज तीन तरह की मांगे की जा रही हैं विपक्षी दलों और नागरिक समूहों की ओर से। एक मांग है ईवीएम में सुधार की। दूसरी मांग है ईवीएम की जगह पर बैलेट पेपर से चुनाव कराने की। तीसरी मांग है चुनाव आयुक्त की नियुक्ति की प्रक्रिया बदलने की। विपक्ष को इन मांगों को आगे बढ़ाते हुए अपना प्रयास जारी रखना चाहिए। एसोसिएशन फार डेमोक्रेटिक रिफार्म ने सुप्रीम कोर्ट में मुकदमा करके इलेक्टोरल बांड को अवैध घोषित करवा दिया। लेकिन उस मामले में किसी पार्टी को कोई दंड नहीं दिया गया।

इसी तरह से एडीआर का कहना है कि पिछले लोकसभा चुनाव में मतदान के बाद अचानक बड़ी संख्या में दो करोड़ के आसपास वोट बढ़ गए। उससे 75 से अधिक लोकसभा सीटों पर असर पड़ा। अगर ऐसा न हुआ होता तो आज देश में इंडिया की सरकार होती।

लोकतंत्र तमाम कमियों के बावजूद आज भी दुनिया की सबसे बेहतर शासन प्रणाली है। इसे सभी प्रणालियों का नवनीत कहा जाता है। लेकिन जरूरत है उसके स्वास्थ्य को लेकर जागरूक रहने की। अगर यह जागरूकता नहीं प्रदर्शित की गई तो अंत में रघुवीर सहाय की वह पंक्ति याद आएगी कि लोकतंत्र का अंतिम क्षण है कह कर आप हंसे।

महाराष्ट्र में दो सीटों पर सपा की शानदार जीत

फाइल फोटो

बुलेटिन ब्यूरो

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी ने दो महत्वपूर्ण सीटों पर शानदार जीत दर्ज की है। समाजवादी पार्टी महाराष्ट्र के कद्दावर नेता अबू आसिम आजमी ने एनसीपी (अजित पवार) के वरिष्ठ नेता नवाब मलिक को शिकस्त दी है। जिन सीटों पर समाजवादी पार्टी ने जीत दर्ज की है, वहां समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने सभाएं कीं थीं।

महाराष्ट्र के मानखुर्द शिवाजी नगर सीट से अबू आसिम आजमी ने 12753 वोटों से जीत दर्ज की। उन्हें 54780 वोट मिले जबकि उनके निकटतम प्रतिद्वंदी एआईआईएम के अतीक अहमद खां को 42027 वोट मिले। एनसीपी नेता नवाब मलिक 15501 वोट पर ही सिमट गए। 22 राउंड की गणना के बाद श्री आजमी को निर्वाचित घोषित किया गया। श्री आजमी के खिलाफ 21 उम्मीदवार मैदान में थे।

वहीं भिवंडी ईस्ट सीट से समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी रईस कसम शेख ने 52015 वोटों से शानदार जीत दर्ज की है। उन्हें कुल

119687 वोट मिले। उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी शिवसेना-शिंदे के संतोष शेट्टी को हराया। संतोष को महज 67672 मिले। यहां रईस कसम शेख के खिलाफ 10 उम्मीदवार मैदान में थे। यहां बसपा के परशुराम पाल को केवल 540 वोट मिले जबकि उनसे अधिक वोट नोटा को 738 वोट मिले। 25 राउंड की गिनती के बाद रईस शेख को निर्वाचित घोषित किया गया।

अखिलेश के स्वागत में उमड़ी भीड़

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव 27 नवंबर को अंबेडकरनगर व 30 नवंबर को अलीगढ़ जनपद पहुंचे तो वहां उनका गर्मजोशी के साथ भव्य स्वागत किया गया। श्री अखिलेश यादव की एक झलक पाने के लिए जनता का सैलाब उमड़ पड़ा और उनसे हाथ मिलाने वालों की होड़ लग गई।

जैसा कि श्री अखिलेश यादव का स्वभाव है, उन्होंने किसी को भी निराश नहीं किया और सबसे मुलाकात की। हालचाल पूछा। उन्होंने कार्यकर्ताओं में जोश भरा और 2024 के विधानसभा चुनाव के लिए अभी से मुट्ठी बांधकर तनकर खड़े होने का आह्वान किया।

श्री अखिलेश यादव अंबेडकरनगर जनपद के आलापुर विधानसभा क्षेत्र से समाजवादी पार्टी के विधायक त्रिभुवन दत्त के घर आयोजित वैवाहिक कार्यक्रम में शामिल होने के लिए पहुंचे थे। अंबेडकरनगर जनपद में दाखिल होते ही उनके स्वागत की होड़ लग गई। कार्यकर्ताओं के अलावा आमजन का रेला उमड़ पड़ा। हर शख्स उनकी एक झलक पाने को बेताब दिखा।

श्री अखिलेश यादव ने सभी से आत्मीय संवाद किया। कुशलक्षेम पूछी और भाजपा सरकार के अन्याय के खिलाफ डटकर मुकाबला करने की अपील की। भारी भीड़ की वजह से जो युवा उनके पास नहीं पहुंच पा रहे थे, उन्हें संकेतों से मुट्ठी बांधकर भाजपा के खिलाफ आवाज बुलंद करने का संदेश दिया। जिधर से भी श्री अखिलेश यादव गुजरे, अखिलेश भैया जिंदाबाद का नारा गुंजायमान हो उठा।

यहां पत्रकारों ने श्री अखिलेश यादव से देश-

प्रदेश के हालात पर तमाम सवाल किए। पत्रकारों से बातचीत करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा उपचुनाव की सभी सीटें हार रही थी लेकिन प्रशासन ने बेइमानी करके उसे जिताया है, सभी लोगों ने देखा कि किस तरह से प्रशासन ने सत्ता का दुरुपयोग करके समाजवादी पार्टी के वोटरों को वोट नहीं डालने दिया। वोटरों के साथ गाली गलौज की और उन्हें धमकाया।

संभल की घटना का जिक्र आने पर श्री अखिलेश यादव ने कहा कि संभल में हुई घटना के लिए भाजपा सरकार जिम्मेदार है। संभल में घटना हुई नहीं है, भाजपा सरकार ने उसे कराया है। अफवाहों में कुछ नहीं होता है लेकिन अफवाहों से बहुत कुछ हो जाता है। श्री अखिलेश यादव ने सवाल किया कि जब 19 नवंबर को पहले दिन सर्वे हुआ तो सभी लोगों ने सर्वे में पूरा सहयोग दिया और सर्वे का काम पूरा हुआ लेकिन उसके बाद क्या कारण है कि दोबारा सर्वे करना पड़ा।

उन्होंने सवाल पूछा कि क्या जब सर्वे टीम दोबारा गई तो उसके साथ भाजपा कार्यकर्ता नहीं थे, क्या उन कार्यकर्ताओं ने नारेबाजी नहीं की। तब, पुलिस प्रशासन ने नारेबाजी करने वाले कार्यकर्ताओं पर क्या कार्रवाई की? श्री यादव ने कहा कि अब इस अत्याचारी व अन्याय करने वाली भाजपा सरकार के दिन लद गए हैं। 2027 के चुनाव में जनता इस सरकार को उखाड़ फेंकेगी।

30 नवंबर को एक कार्यक्रम में शरीक होने के लिए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव अलीगढ़ पहुंचे। यहां नेताओं व कार्यकर्ताओं ने उनका जोरदार स्वागत किया। उनसे मिलने के लिए युवाओं का तांता लग गया। श्री यादव ने सभी से मुलाकात की। उन्होंने यहां भी सभी से 2027 विधानसभा चुनाव के लिए अभी से जुट जाने की अपील की ताकि जुल्म व अत्याचार करने वाली भाजपा सरकार को उखाड़ फेंका जा सके।

संभल की आड़ में ढक रहे कुंदरकी का पाप

बुलेटिन ब्यूरो

उपचुनाव में भाजपा सरकार की धांधली जिस तरह दुनिया के सामने उजागर हुई और लोकतंत्र पर बदनुमा दाग लगा उसपर पर्दा डालने के लिए भाजपा सरकार ने संभल में दंगे का सहारा लिया। उपचुनाव के नतीजों के ठीक बाद संभल में जिस तरह दंगा हुआ उससे साफ जाहिर होता है कि यह सरकार प्रायोजित था। सर्वे के बहाने प्रशासन व पुलिस ने जिस तरह की हरकतें की, वह भाजपा सरकार की नाकामी का जीता जागता सबूत है।

उपचुनाव में कुंदरकी समेत सभी विधानसभा सीटों पर भाजपा का नंगा नाच दुनिया के सामने आया तो भाजपा बेचैन हो उठी। खासतौर पर संभल की कुंदरकी सीट पर वोटरों को वोट न डालने देने की भाजपाई साजिश जब लोगों के बीच आ गई तो उससे ध्यान हटाने के लिए भाजपा ने संभल का सहारा लिया। वहां सर्वे के नाम पर जो हिंसक घटना हुई वह स्पष्ट रूप से सरकार प्रायोजित थी।

दुनिया ने कैमरे की नजर से देखा कि कुंदरकी में किस तरह भाजपा ने पुलिस को आगे कर मतदाताओं को धमकाया, दौड़ाया। पिस्टल लेकर इंस्पेक्टर की तस्वीरें वायरल होने लगीं। 23 नवंबर को उसी के अनुरूप नतीजा आया तो दुनिया को समझ में आ गया कि भाजपा ने किस तरह सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग किया है। मतदान के दिन भाजपा

संभल

की धांधली उजागर होते ही वह इस पाप को ढकने का तानाबाना बुनने लगी थी।

19 नवंबर को अदालत के आदेश पर संभल की जामा मस्जिद का सर्वे हो चुका था। 23 नवंबर के नतीजों के बाद जब 24 नवंबर को संभल में दंगा हो गया और बेकसूर मारे गए तो यह कहा जाने लगा कि भाजपा ने जानबूझकर इस मामले को उभारा। अब सवाल उठने लगे हैं कि नतीजों के एक दिन बाद उसी जामा मस्जिद का दुबारा 24 नवंबर की सुबह-सुबह सर्वे कराने का तुक क्या था? उसी अदालती आदेश पर दो बार सर्वे?

दूसरी बार सर्वे करने गए कोर्ट कमिश्नर सुबह 10 बजे से पहले ही क्यों पहुंच गए? उनके साथ चल रहे एक पक्ष के लोग धार्मिक नारे लगाते हुए जामा मस्जिद क्यों गए? जब यह एक कानूनी प्रक्रिया थी तो उसमें धार्मिक संगठनों के लोगों का क्या काम था और नारे लगाकर एक समुदाय को उकसाने वाले इन तत्वों के खिलाफ पुलिस ने कार्यवाही क्यों नहीं की? उन्हें नारे लगाने से क्यों नहीं रोका? यह ऐसे सवाल हैं जोकि भाजपा सरकार को कटघरे में खड़ा कर रहे हैं। संभल में दंगा भड़कने के लिए सीधे तौर पर भाजपा सरकार और उसके अधिकारियों को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है। दंगे में हुई मौतों पर भी कई तरह के सवाल उठाए जा रहे हैं और भाजपा सरकार अपनी नाकामी को छिपाने के लिए कुतर्क गढ़ रही है।

यहां तक कि संभल मामले की जांच के लिए गठित न्यायिक आयोग की निष्पक्षता पर ही सवाल भी उठने लगे हैं क्योंकि आयोग में एक ऐसे शख्स को सदस्य नामित किया है जिनके भाजपा से रिश्ते हैं। लिहाजा रिपोर्ट से पहले ही यह जाहिर हो गया है कि रिपोर्ट क्या आने वाली है।

20 नवंबर को मतदान में भाजपा की धांधली, 23 नवंबर को भाजपा सरकार के अनुरूप चुनाव के नतीजे और 24 नवंबर को संभल में दूसरी बार बेतुके सर्वे के बहाने दंगा, यह ऐसे बिंदु हैं जिसकी वजह से भाजपा घिर चुकी है कि उसने उपचुनाव में अपने पाप को ढंकने के लिए लोगों का ध्यान इस ओर मोड़ने की साजिश की है।

सरकार ने ध्यान हटाने के लिए कराया दंगा

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा कि संभल में दंगा भाजपा सरकार ने जानबूझ कर अपनी नाकामी छिपाने और जनता का ध्यान हटाने के लिए कराया है। भाजपा सरकार अन्याय और अत्याचार कर रही है। पुलिस ने सरकारी और निजी हथियारों से गोली चलाई है। युवाओं की मौत बेहद दुःखद है।

उन्होंने कहा कि इसी तरह से भाजपा सरकार ने कानपुर में बड़ी संख्या में लोगों के खिलाफ अज्ञात में मुकदमा लिखाया था और वसूली की थी। बहराइच में भी भाजपा ने दंगा कराया था, वहां तो भाजपा विधायक ने ही भाजपा नेताओं के खिलाफ एफआईआर कराई थी। भाजपा पहले अन्याय करती है और अगर कोई अन्याय का विरोध करता है तो सरकार के अधिकारी उसके ही खिलाफ मुकदमा करा देते हैं।

उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी के संभल के सांसद श्री जियाउर्रहमान बर्क उस दिन संभल में नहीं थे, बंगलुरु में थे और उनके खिलाफ झूठा मुकदमा लिख दिया। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा ने चुनाव में जो लूट की है उसे छिपाने के लिए जानबूझ कर दंगा कराया है।

सपा ने संसद में संभल पर सरकार को घेरा

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी ने संसद के दोनों सदनों में संभल में दंगे का मुद्दा जोर-शोर से उठाकर सत्तारूढ़ भाजपा को जमकर घेरा।

सपा संसदीय दल के नेता श्री अखिलेश यादव ने 3 दिसंबर को लोकसभा में कहा कि संभल की शाही जामा मस्जिद के सम्बंध में 19 नवंबर में सिविल जज चंदौसी में याचिका दायर की गयी, कोर्ट ने दूसरे पक्ष को सुने बिना सर्वे का आदेश दे दिया।

आदेश मिलने के बाद संभल के जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक बिना आर्डर पढ़े 2 घंटे में ही सर्वे के लिए पुलिस लेकर जामा मस्जिद पहुंच गए। ढाई घंटे सर्वे के बाद जिलाधिकारी ने कहा कि सर्वे पूरा हो गया है। अब सर्वे रिपोर्ट कोर्ट में जमा की जाएगी।

29 नवंबर को कोर्ट में तारीख थी, सभी लोग कोर्ट की तारीख के लिए तैयारी कर रहे थे लेकिन 23 नवंबर 2024 की रात पुलिस प्रशासन ने कहा कि 24 की सुबह दुबारा सर्वे होगा। शाही जामा मस्जिद के वकील ने कहा कि जब एक बार सर्वे हो गया तो दुबारा सर्वे किसके आदेश पर होगा। अगर दुबारा सर्वे कराना है तो कोर्ट से आदेश कराएं लेकिन जिलाधिकारी ने कोई सुनवाई नहीं की।

तानाशाही दिखाते हुए सुबह ही सर्वे के लिए पहुंच गए। मुस्लिम समाज के लोगों ने फिर भी धैर्य रखा, डेढ़ घंटे सर्वे के बाद जब लोगों को जानकारी हुई तो एकत्र होने लगे और सर्वे का कारण जानना चाहा।वीडियो रिकार्डिंग है कि पुलिस ने अपने सरकारी और प्राइवेट असलहों से गोलियां चलायी हैं। श्री यादव ने कहा कि संभल घटना के लिए याचिकाकर्ता के साथ ही प्रशासन और सरकार जिम्मेदार है। घटना के जिम्मेदार अधिकारियों को निलंबित करना चाहिए। उनपर हत्या का मुकदमा चलाया जाना चाहिए जिससे भविष्य में कोई इस प्रकार संविधान विरोधी कार्य को अंजाम न दे सके।

राज्यसभा में भी समाजवादी पार्टी ने संभल के मुद्दे पर सरकर को घेरा। सपा के वरिष्ठ सांसद एवं पार्टी के प्रमुख महासचिव प्रो रामगोपाल यादव ने संभल दंगे को सरकार प्रायोजित बताते हुए कहा कि निरीह लोगों पर वहां पुलिस ने जुल्म ढहाया।

संभल के पीड़ितों की सपा ने ली सुध

संभल में 24 नवंबर को हुए दंगे के आरोप में जेल में बंद आरोपितों से समाजवादी पार्टी के नेताओं के एक दल ने 2 दिसंबर को मुरादाबाद जेल जाकर भेंट की। उनसे संभल में हुए दंगे के बारे में तफसील से जाना।

इधर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने ऐलान किया है कि संभल दंगे में मारे गए निर्दोष लोगों के परिवारीजनों को पार्टी पांच-पांच लाख रुपये की आर्थिक मदद देगी। साथ ही उन्होंने मांग की है कि भाजपा सरकार संभल दंगा में मृतक आश्रितों को 25-25 लाख रुपये का मुआवजा दे।

उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी को राष्ट्रपति और माननीय सर्वोच्च न्यायालय के अतिरिक्त अन्य किसी से इंसाफ की उम्मीद नहीं है। जरूरत है कि देश की एकता और शांति के दुश्मनों को उनकी सही जगह पहुंचाया जाए।

2 दिसंबर को समाजवादी पार्टी के पूर्व सांसद एसटी हसन, विधायक नवाब जान खां, चौधरी समरपाल सिंह समेत 15 नेताओं ने मुरादाबाद जेल जाकर दंगा आरोपितों से मुलाकात कर उनकी तकलीफों को सुना। उन्होंने बताया कि जेल में उनके साथ अच्छा सुलूक नहीं किया जा रहा है। दवाएं तक नहीं दी जा रही हैं। सपा के दल में शामिल में पूर्व सांसद एसटी हसन ने कहा कि आरोपितों का दुख-दर्द सुनकर उनकी आंखें भर आईं। पुलिस ने उनपर बहुत जुल्म किया है।

सपा के दल को संभल जाने से बलपूर्वक रोका

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार अब इस जुगत में है कि संभल हिंसा की सही तस्वीर दुनिया के सामने न आ जाए इसलिए अब सरकार ने जन प्रतिनिधियों को संभल जाने से रोकने के लिए ताकत लगा दी है।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव एक प्रतिनिधिमंडल को संभल भेजकर वहां के हालात से वाकिफ होना चाहते थे ताकि सच सामने आ सके। प्रतिनिधिमंडल में संवैधानिक पदों पर बैठे जनप्रतिनिधियों को शामिल किया गया था मगर भाजपा सरकार ने उन्हें बलपूर्वक रोक लिया। यह तब हुआ जब सरकार के ही कार्यवाहक डीजीपी ने नेता विरोधी दल को 3 दिन बाद संभल जाने का आग्रह किया था मगर 3 दिन की मियाद पूरी होते ही सरकार के इशारे पर वह मुकर गए।

2 4 नवंबर को संभल हिंसा के बाद समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने हिंसा की विस्तृत जांच करने और मृतकों के परिवारीजनों के प्रति शोक संवेदना प्रकट करने के लिए एक प्रतिनिधिमंडल संभल भेजने का फैसला किया। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पाण्डेय के नेतृत्व में गठित इस प्रतिनिधिमंडल में विधान परिषद में नेता प्रतिपक्ष लाल बिहारी यादव, लोकसभा सदस्य हरेन्द्र मलिक, श्रीमती रूचि वीरा, सुश्री इकरा हसन, जिया उर्रहमान बर्क, नीरज मौर्य के अलावा विधायक कमाल अख्तर, नवाब इकबाल महमूद, श्रीमती पिंकी सिंह यादव के अलावा असगर अली अंसारी जिलाध्यक्ष समाजवादी पार्टी संभल, जयवीर सिंह यादव जिलाध्यक्ष समाजवादी पार्टी मुरादाबाद व शिवचरण कश्यप जिलाध्यक्ष बरेली समाजवादी पार्टी को शामिल किया गया।

तय कार्यक्रम के अनुसार 26 नवंबर को प्रतिनिधिमंडल को संभल रवाना होना था मगर सरकार ने पुलिस के बल पर नेताओं को हाउस अरेस्ट करना शुरू कर दिया। नेता विरोधी दल माता प्रसाद पाण्डेय से डीजीपी ने बात कर उनसे 3 दिन बाद संभल जाने का आग्रह किया। इसके बाद श्री पाण्डेय ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए बताया कि भाजपा सरकार सांप्रदायिक भावना से काम कर रही है। इस सरकार का लोकतंत्र में

विश्वास नहीं है।

इसके बाद 30 नवंबर को फिर प्रतिनिधिमंडल ने संभल जाने का कार्यक्रम तय किया मगर सरकार ने पुलिस के बल पर समाजवादी पार्टी के नेताओं के वाहनों के आगे अपने वाहन लगाकर बलपूर्वक उन्हें रोक दिया। सांसदों को दिल्ली-यूपी बार्डर पर हाईवे पर रोक दिया गया। जिलों के नेताओं को हाउस अरेस्ट कर लिया गया। कई नेता पुलिस को चकमा देकर संभल के लिए निकले मगर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

संभल के हालात का जायजा लेने जा रहे समाजवादी पार्टी के प्रतिनिधिमंडल को पुलिस के बल पर जबरिया रोकने पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने नाराजगी जताते हुए तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में भाजपा सरकार लोकतंत्र की धज्जियां उड़ा रही है। भाजपा सरकार पूरी तरह से तानाशाही पर उतारू है। प्रदेश में अन्याय अत्याचार चरम पर है। भाजपा का लोकतंत्र में विश्वास नहीं है। उत्तर प्रदेश में आपातकाल जैसी स्थिति है।

उन्होंने कहा कि सत्ता के इशारे पर पुलिस द्वारा उत्तर प्रदेश विधानमंडल के दोनों नेता विरोधी दल और समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष समेत सांसदों, विधायकों और जिलाध्यक्ष को उनके घरों में कैद कर देना बेहद निंदनीय है। भाजपा सरकार संभल में उसके द्वारा किए गए अन्याय और अत्याचार को छुपाना चाहती है। यह डरी हुई सरकार है। सच्चाई को सामने नहीं आने देना चाहती है। वह जन आक्रोश से भयभीत है।

उन्होंने कहा कि प्रतिनिधिमंडल पर इस तरह प्रतिबंध लगाना भाजपा सरकार के शासन, प्रशासन और सरकारी प्रबंधन की नाकामी है। ऐसा प्रतिबंध अगर सरकार उन पर पहले ही लगा देती जिन्होंने दंगा-फ़साद करवाने का सपना देखा और उन्मादी नारे लगवाए तो संभल में सौहार्द-शांति का वातावरण नहीं बिगड़ता।

संविधान की रक्षा का संकल्प

बुलेटिन ब्यूरो

राजधानी लखनऊ के बीकेटी स्थित सैरपुर बाजार में संविधान दिवस के अवसर पर 19 नवंबर को आयोजित संविधान मेला एवं युवा महोत्सव कार्यक्रम में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने शिरकत की और जनसमुदाय को संबोधित करते हुए संविधान की रक्षा का संकल्प दिलाया। यह आयोजन चिनहट की ब्लाक प्रमुख श्रीमती ऊषा सेन ने किया था।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार PDA से घबराई हुई है। PDA देश की 90 फीसदी आबादी का नारा है। अभी तक बाबा साहब के संविधान ने PDA की रक्षा की है। अब PDA और हम सबकी जिम्मेदारी है कि बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर के बनाए संविधान की रक्षा करें। आज संविधान पर खतरा मंडरा रहा है। जब तक भाजपा की सरकार है संविधान पर खतरा बना रहेगा। भाजपा देश को संविधान नहीं मनविधान से चलाना चाहती है। अगर इनके विचार नहीं बदले तो ये संविधान बदल देंगे।

उन्होंने कहा कि हम सभी लोगों को एकजुटता के साथ संविधान बचाने की लड़ाई लड़ते रहना हैं। संविधान तभी बचेगा जब दिल्ली और लखनऊ से भाजपा की सरकार का सफाया होगा।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार के एजेंडे में नौकरी, रोजगार नहीं है। सरकार युवाओं को नौकरी नहीं देना चाहती है। साजिश और षड़यंत्र करके आरक्षण छीन रही है। संविधान विरोधी कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा की नीतियां युवा, किसान और PDA विरोधी हैं। सरकार ने नौकरियों को आउटसोर्स कर दिया जिससे आरक्षण न देना पड़े। भाजपा PDA से उनका हक छीन रही है। PDA को बराबरी पर नहीं आने देना चाहती है।

श्री यादव ने कहा कि हम गरीबों, दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों को हक और

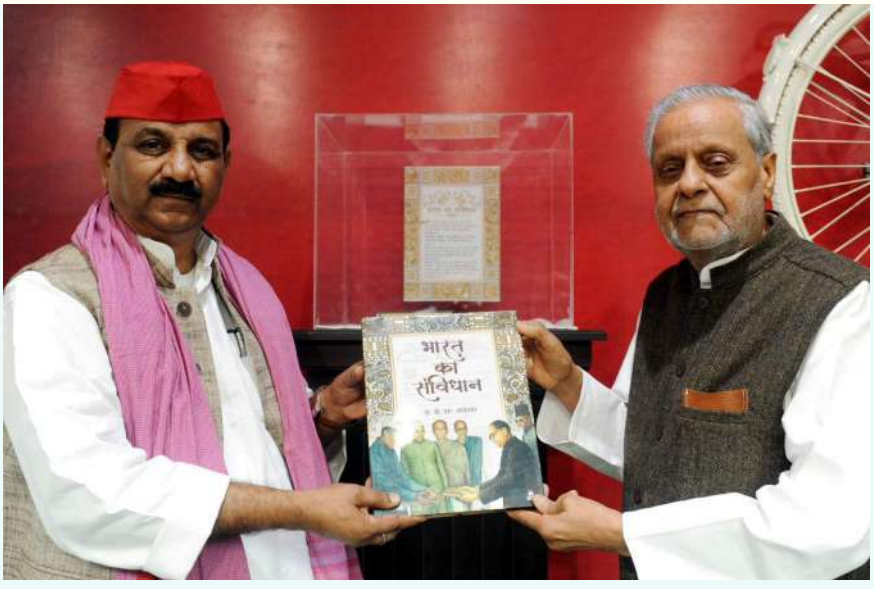

संविधान की गरिमा बनाए रखेंगे समाजवादी

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी ने पूरे उत्तर प्रदेश में 26 नवंबर को संविधान दिवस पर संविधान के मूल उद्देश्यों की सुरक्षा व उसकी गरिमा बनाए रखने का संकल्प लिया। समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय लखनऊ में भारत के संविधान में उल्लिखित उद्देशिका का राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी तथा प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल ने संविधान मान स्तंभ के समक्ष वाचन किया।

इस अवसर पर समाजवादियों ने संविधान के मूल उद्देश्यों की सुरक्षा एवं संविधान की गरिमा बनाए रखने का संकल्प भी लिया। इस अवसर पर प्रदेश के सभी जिलों में पार्टी कार्यालयों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए।

संविधान दिवस पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा कि संविधान हमारी संजीवनी है। संविधान PDA का प्रकाश स्तंभ है। सच्चे समाजवादी ही संविधानवादी हैं। हम संविधान का सम्मान करते हैं। जबकि भाजपा के लोग संविधान नहीं मनविधान से चलते हैं।

उन्होंने कहा कि संविधान को मानना और उसके दिखाए रास्ते पर चलना ही सबसे बड़ा उत्सव है। ये हर दिन सच्चे मन से निभाने वाला फ़र्ज़ है, कोई दिखावटी सालाना जलसा नहीं। एक तरफ़ भाजपा संविधान को ताक पर रखकर मनमानी करना चाहती है, तो दूसरी तरफ़ दिखावा करना चाहती है। गौरतलब है कि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने पार्टी मुख्यालय, लखनऊ में 26 जुलाई 2024 को आरक्षण दिवस पर संविधान मान स्तंभ की स्थापना की थी।

अधिकार दिलाने की बात करते हैं तो भाजपा के लोग जातिवाद का आरोप लगाते हैं। ये जातियां हमने नहीं बनायी हैं। हम तो वंचित समाज के लोगों को अधिकार और सम्मान दिलाने की लड़ाई लड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि बाबा साहब का संविधान हम सभी लोगों को जोड़ता है। हमें सम्मान और अधिकार दिलाता है। संविधान हमारी रक्षा करता है। हम सबकी ढाल है। संविधान हम सबके लिए संजीवनी है। बाबा साहब ने संविधान में सभी को एक वोट का अधिकार दिलाया है। उसी से लोकतंत्र है। लोकतंत्र और संविधान बचाना है।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ने किसानों, नौजवानों, व्यापारियों सभी को धोखा दिया है। नौजवानों के साथ लगातार साजिश और षड्यंत्र कर रही है। जो लोग वन-नेशन, वन इलेक्शन की बात करते हैं, वे एक साथ एक परीक्षा नहीं करा सकते हैं। नौजवान भाजपा की साजिश को समझ गया और लोकसेवा आयोग के सामने धरने पर बैठ गया। आंदोलन करके भाजपा सरकार को झुकने पर मजबूर कर दिया।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा समाज को बांट रही है। समाज में नफरत फैला रही है। मुख्यमंत्री जी का 'बटोगे तो कटोगे' का नारा भारतीय इतिहास का सबसे निगेटिव नारा है। यह असंवैधानिक नारा है। श्री यादव ने कहा कि वस्त्रों से कोई योगी नहीं बनता है। भाषा, व्यवहार और विचार से लोग योगी और संत बनते हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा संवैधानिक संस्थाओं को एक विचार और एक रंग में रंगना चाहती है। हम सभी को संकल्प लेना है कि एकजुट होकर संविधान बचाना है। आगे बढ़ना है।

PDA को मजबूत बनाने में अधिवक्ताओं की अहम भूमिका

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी अधिवक्ता सभा ने 3 दिसंबर को अधिवक्ता दिवस मनाया। इस अवसर पर भारत के प्रथम राष्ट्रपति एवं संविधान सभा के अध्यक्ष रहे डॉ राजेन्द्र प्रसाद के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव व पूर्व मंत्री राजेन्द्र चौधरी रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजवादी अधिवक्ता सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष कृष्ण कन्हैया पाल ने की जबकि संचालन राष्ट्रीय महासचिव श्री हैदर अब्बास ने किया।

कार्यक्रम में श्री राजेन्द्र चौधरी ने कहा कि भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में अधिवक्ताओं की अग्रणी भूमिका थी। इसमें प्रथम पंक्ति के सभी नेता जाने माने अधिवक्ता थे। आज देश में भारत के संविधान और लोकतंत्र पर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। समाज की एकता, आपसी भाईचारा में भाजपा नफरत पैदा करने की साजिश कर रही है।

श्री राजेन्द्र चौधरी ने कहा कि श्री अखिलेश यादव PDA के माध्यम से सामाजिक न्याय की लड़ाई को नई दिशा दे रहे हैं। उनके नेतृत्व में सामाजिक न्याय के आंदोलन को इसकी परिणति तक पहुंचाने का हम सबको संकल्प लेना होगा। PDA से ही मानवता के खिलाफ नाइंसाफी के खिलाफ जंग जीती जा सकेगी। राष्ट्रीय राजनीति की मुख्यधारा में

इसे शामिल कराने के अभियान को सशक्त बनाने में अधिवक्ताओं की मुख्य भूमिका होगी।

वक्ताओं ने कहा कि भाजपा के सत्ता में रहते हुए लोकतंत्र खतरे में रहेगा। अधिवक्ताओं ने संकल्प लिया कि 2027 में श्री अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री बनाने के लिए दिन-रात एक कर देंगे।

अधिवक्ता दिवस के कार्यक्रम में सर्वश्री देवी बख्श सिंह, शुभांगी द्विवेदी, धीरज यादव, उमाकांत, ज्ञानेश्वर प्रसाद पाण्डेय, ललित तिवारी, उमेश प्रताप यादव, सरदार आलोक सिंह, आदेश यादव, अजय गुप्ता, योगेन्द्र यादव, संजीव त्रिवेदी, महमूद आलम, विष्णु यादव, दिलीप पाठक, राकेश यादव, अमित यादव, अंजनी यादव, दानिश सिद्दीकी, अमरेन्द्र सिंह, सोहराब खान, अली हाशमी, सर्वेश सिंह, शैलेन्द्र यादव, विजय बहादुर यादव, दिनेश कुमार यादव, अंजुबाला, अंकित यादव, संदीप यादव, दिलीप पाठक, उमेश प्रताप, रमेश यादव, मोहम्मद आसिफ, शिवकुमार यादव, अफजल चौधरी, सुनील मौर्या, अनुष्का यादव, राहुल सरोज, मयंक यादव, स्वतंत्रलता यादव, संदीप यादव, विपिन यादव, शिवशरन यादव, आलोक यदुवंक्षश, वीर बहादुर, शैलेन्द्र कुमार, शुभम कुमार, आशीष कुमार यादव, आदेश कुमार, विक्की यादव, राजेश कुमार यादव, उपेन्द्र कुमार सागर, कुतुबुद्दीन खान, संदीप यादव, रामवृक्ष यादव, दिनेश कुमार यादव, योगेन्द्र यादव, सायमा खान, महमूद आलम, जितेन्द्र नाथ यादव, उमाकांत, धर्मराज प्रजापति, लवकुश, आदेश यादव, प्रदीप भारती, शोहेब उस्मानी, मोनू यादव प्रदेश सचिव, संजीत पटेल, कंचन मिश्रा पाठक, अनुराग श्रीवास्तव, अमित सिंह, अजय गुप्ता, प्रिंस पाण्डेय, विपिन यादव, कान्हा श्रीवास्तव आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

झारखंड में
अखिलेश का गर्मजोशी से स्वागत

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने 28 नवंबर को झारखंड की राजधानी रांची पहुंचकर श्री हेमंत सोरेन के मुख्यमंत्री पद पर लिए गए शपथ ग्रहण समारोह में शिरकत की। श्री यादव ने चौथी बार मुख्यमंत्री बनने पर श्री हेमंत सोरेन को बधाई दी और भरोसा जताया कि श्री सोरन झारखंड राज्य के विकास के लिए और बेहतर काम करेंगे।

झारखंड विधानसभा चुनाव में झारखंड की जनता ने श्री हेमंत सोरेन के पक्ष में जनादेश दिया। चौथी बार श्री हेमंत सोरेन मुख्यमंत्री चुने गए तो उन्होंने शपथ ग्रहण समारोह में श्री अखिलेश यादव काे भी खासतौर पर आमंत्रित किया। श्री अखिलेश यादव ने न केवल न्योता स्वीकार किया बल्कि 28 नवंबर को रांची पहुंचकर श्री सोरेन को व्यक्तिगत बधाई दी।

श्री अखिलेश यादव रांची पहुंचे तो वहां उनका भव्य स्वागत किया गया। युवाओं में उनकी एक झलक पाने की बेताबी श्री अखिलेश यादव की देश स्तर पर बढ़ती लोकप्रियता पर मुहर लगा रही थी। श्री अखिलेश यादव ने सभी के प्रति आभार जाता और सभी से स्नेहिल मुलाकात की।

युवाओं में श्री अखिलेश यादव के साथ फोटो खिंचवाने की होड़ लग गई। श्री अखिलेश यादव ने किसी को भी निराश नहीं किया और सहज भाव से सभी के साथ फोटों खिंचवाई।

शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने के बाद रांची में पत्रकारों से मुखातिब होते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि झारखंड में चुनाव परिणाम बहुत शुभ रहा। तरह-तरह की परिस्थितियों के बावजूद लोगों ने सूझबूझ से लोकतांत्रिक फैसला लेकर एक

प्रगतिशील सरकार चुनी। झारखंड की जनता ने श्री हेमंत सोरेन को चौथी बार मुख्यमंत्री पद पर बिठाया।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि वह झारखंड की जनता का आभार व्यक्त करते हैं कि उन्होंने भाजपा को शिकस्त दी। उन्होंने कहा कि उन्हें पूरा भरोसा है कि श्री हेमंत सोरेन झारखंड को खुशहाली, तरक्की और विकास के रास्ते पर और आगे लेकर जाएंगे।

उल्लेखनीय है कि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव की कुशल रणनीति की वजह से लोकसभा चुनाव में भाजपा को यूपी में करारी शिकस्त मिली और पूर्ण बहुमत से भाजपा बैसाखी वाली सरकार में तब्दील हो गई।

भाजपा को शिकस्त देकर समाजवादी पार्टी देश की तीसरी सबसे बड़ी बनकर उभरी तो इस कमाल के लिए देशभर में श्री अखिलेश यादव की सकारात्मक राजनीति की सराहना की गई। श्री अखिलेश यादव के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ा।

देश की मौजूदा राजनीति में श्री अखिलेश यादव को इसलिए और भी अहमियत दी जाती है क्योंकि युवाओं में उनका एक खास आकर्षण है।

श्री अखिलेश यादव की बेहतरीन नेता की स्थापित हो चुकी छवि को देखते हुए देश के अन्य राज्यों में समान विचारधारा वाले दल अपने कार्यक्रमों में उन्हें आमंत्रित जरूर करते हैं। पिछले महीने 16 अक्टूबर को श्री अखिलेश यादव को जम्मू-कश्मीर में श्री उमर अब्दुल्लाह ने अपने शपथ ग्रहण समारोह में आमंत्रित किया था। यह श्री अखिलेश यादव की बेहतरीन छवि ही है कि कश्मीरियों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया था।

परिनिर्वाण दिवस पर बाबा साहब को श्रद्धांजलि

बुलेटिन ब्यूरो

भारतरत्न बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर के परिनिर्वाण दिवस पर 6 दिसंबर को समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय समेत प्रदेश के सभी जिला कार्यालयों पर उन्हें याद करते हुए श्रद्धांजलि दी गई।

बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के परिनिर्वाण दिवस पर मुख्य कार्यक्रम समाजवादी पार्टी के राज्य कार्यालय लखनऊ में हुआ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने भारतरत्न बाबा साहबकी प्रतिमा पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए नमन किया।

इस अवसर पर श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भारतरत्न बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर जी ने भारत का संविधान बनाकर देश के गरीबों, दलितों पिछड़ों, अल्पसंख्यकों, आदिवासियों, महिलाओं और वंचित वर्गों को उनका हक और अधिकार दिलाने का काम किया।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार से बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर जी के संविधान को खतरा है। भाजपा संविधान को कमजोर कर रही है। पिछड़ों, दलितों, अल्पसंख्यकों और आदिवासियों का हक छीन रही है। संविधान में दिए आरक्षण को नुकसान पहुंचा रही है। उसकी मंशा संविधान बदलने की है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी पीडीए को एकजुट करके संविधान और लोकतंत्र बचाने और सामाजिक न्याय के लिए पूरी तरह से संकल्पित है। आज हम सभी लोग संकल्प लेते हैं कि बाबा साहब के संविधान पर हो रहे हर हमले के खिलाफ एकजुट होकर मुकाबला करेंगे और संविधान विरोधी ताकतों को मुंहतोड़ जवाब देंगे।

इस अवसर पर नेता विरोधी दल माता प्रसाद पांडेय, समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव राजेंद्र चौधरी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल समेत कई अन्य नेता भी शामिल थे।

उधर समाजवादी पार्टी उत्तराखंड के देहरादून स्थित प्रदेश कार्यालय में बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर जी के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किए गए।

गुरुनानक जी ने सेवा का अप्रतिम मार्ग सुझाया

समाज सुधारक व सिख पंथ के महान मार्गदर्शक गुरुनानक देव जी की 555वीं जयंती पर 15 नवंबर को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने नमन करते हुए कहा कि गुरुनानक जी ने मानवता को परमात्मा की उपासना के साथ सेवा का अप्रतिम मार्ग भी सुझाया।

श्री यादव ने कहा कि गुरु नानक जी ने गुरु ग्रंथ साहब में सिख गुरुओं के उपदेशों के अलावा 30 अन्य संतों और मुस्लिम भक्तों की वाणी भी संकलित की। इनमें कबीर, रविदास, नामदेव, धन्ना और शेख फरीद की वाणी भी है। गुरुनानक जी ने सामाजिक बुराइयों का भी विरोध किया।

गुरुनानक देव की जयंती पर 15 नवंबर को कई प्रमुख सिख तथा पंजाबी संगठनों के प्रतिनिधियों ने लखनऊ में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव से भेंट की। श्री अखिलेश यादव ने उन्हें पावन पर्व पर शुभकामनाएं देते हुए प्रकाश पर्व की बधाई दी। इस पावन पर्व पर श्री अखिलेश यादव से भेंट करने वालों में सनातनी पंजाबी महासभा के कार्यवाहक अध्यक्ष पवन मनोचा, उप्र सिख विचार मंच के अध्यक्ष गुरजीत छाबड़ा आदि प्रमुख रहे।

ऊदा देवी के बताए रास्ते पर चलने का संकल्प

महान वीरांगना ऊदा देवी पासी के बलिदान दिवस पर समाजवादी पार्टी ने उन्हें नमन करते हुए श्रद्धांजलि दी। समाजवादियों ने वीरांगना के बलिदान को याद करते हुए उनके बताए रास्ते पर चलने का संकल्प लिया।

16 नवंबर को बलिदान दिवस पर लखनऊ के काकोरी में सांसद आर.के. चौधरी की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि सभा आयोजित कर उन्हें याद किया गया। श्रद्धांजलि सभा में 1857 के संग्राम में वीरांगना ऊदा देवी के शौर्य एवं साहस का उल्लेख करते हुए सांसद आर.के. चौधरी ने कहा कि सिकंदरबाग के मोर्चे पर हुए घमासान युद्ध में ऊदा देवी ने ब्रिटिश फौज के कमाण्डर कैम्पवेल की सेना से लोहा लिया था। उन्होंने अंग्रेजी सेना के 36 सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया था।

पूर्व विधायक श्याम किशोर यादव, पूर्व विधायक राजेंद्र यादव, पूर्व

विधायक अम्बरीष पुष्कर, प्रदेश उपाध्यक्ष सी.एल. वर्मा, पूर्व विधानसभा प्रत्याशी मलिहाबाद सोनू कन्नौजिया, जिलाध्यक्ष जयसिंह जयंत, जिला महासचिव शब्बीर खान, पूर्व ब्लॉक प्रमुख राजबाला रावत आदि ने वीरांगना ऊदा देवी पासी को सादर नमन करते हुए विनम्र श्रद्धांजलि दी।

साफ़ और बेबाक

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Socialist Leader of India. Chief Minister of UP (2012 - 2017)

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

ये सत्ता के भूख की लड़ाई है, जिसमें जनता झोंकी जा रही है।

Translate post

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

झाँसी हादसे की सबसे बड़ी वजह आम लोगों के जीवन के मोल को न समझना रही, यदि भाजपा सरकार पिछले हादसों से सबक़ लेती तो कई गोद सूनी होने से बच जातीं।

Translate post

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

भाजपा PDA से इतना डर गयी है कि DAP के अंदर भी उन्हें अक्षरों के हेर-फेर से पीडीए ही दिखता है।

रचनात्मक जनता और कार्यकर्ताओं ने इसे समझ लिया है। जनता और कार्यकर्ताओं की इस जागरूकता की जितनी सराहना की जाए कम हैं।

जब PDA की सत्ता आएगी
तब ही DAP मिल पाएगी!

Translate post

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

जिन्होंने बवाल शुरू किया और जो पहले पहल फ़साद की वजह बने, उनकी तस्वीरें कब लगेंगी?

#Sambhal

Translate post

Akhilesh Yadav @yadavakhil... · 21 Nov
ज़ुल्मी हुक्मरानों ने ला दिया है ऐसे हालातों में
पत्थर दे दिये हिफ़ाज़त करनेवालों के हाथों में

देश कहे आज का, नहीं चाहिए भाजपा!

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

सच्चे और साहसी लोगों की शक्ति और सामर्थ्य संघर्षों से ही बढ़ती है। उप्र विधानसभा उपचुनाव में इंडिया गठबंधन के संयुक्त प्रत्याशी के रूप में समाजवादी पार्टी के दोनों विजयी उम्मीदवारों को जिताने के लिए सभी मतदाताओं, समर्थकों, कार्यकर्ताओं और नेताओं का हार्दिक आभार और दिल से शुक्रिया। सीसामऊ विधानसभा सीट से श्रीमती नसीम सोलंकी व करहल विधानसभा सीट से श्री तेज प्रताप यादव को जीत की हार्दिक बधाई। इंडिया गठबंधन-सपा के अन्य सभी प्रत्याशियों को भी बधाई, जिनकी नैतिक जीत हुई है क्योंकि दुनिया ने सरेआम वोट की लूट को देखा है।

ये पीडीए की एकजुटता और सजगता की बहुत बड़ी जीत है!

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

भाजपाई जान लें सत्ता औरों की सेवा के लिए होती है, स्वयं के आनंद के लिए नहीं।

Translate post

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

एक कृषि प्रधान देश में किसान का आंदोलित होना सरकार की सबसे बड़ी विफलता है।

Translate post

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

अब पीडीए ने मिलकर संकल्प लिया है ठान
बाँधो मुट्ठी, तानो मुट्ठी और कर दो ये ऐलान

सुन लें ये प्रभुत्ववादी, कान खोलकर आज
अब नहीं चलेगा 90 के ऊपर 10 का राज!

#जुड़ेंगे और जीतेंगे

Akhilesh Yadav @yadavakhil... · 28 Nov
भाजपा राज में जाति छोड़कर सब कुछ गिना जाएगा।

हम एक दिन गिनवा के ही मानेंगे। भाजपा जातिगत-जनगणना हमेशा के लिए नहीं टाल सकती।

वाराणसी में पशु-पक्षियों की डिजिटल काउंटिंग शुरू: गांव से लेकर शहर तक हर घर गिने जाएंगे पशु-पक्षी, फरवरी तक पूरी होनी है 21वीं पशुधन जनगणना

Following

Akhilesh Yadav @yadavakhil... · 28 Nov

श्री हेमंत सोरेन जी के नेतृत्व में झारखंड में 'इंडिया गठबंधन' की ऐतिहासिक जीत के पीछे सच्चे जनमत की ताक़त है। आशा है मुख्यमंत्री के रूप में उनकी एक और नई पारी लोक कल्याणकारी सकारात्मक राजनीति का नया इतिहास लिखेगी।

हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ!

@HemantSorenJMM
#इंडिया
#INDIA

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

भविष्य संवारना ही सच्चा विकास है।

Translate post

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

भाजपा सरकार ने देश को देखो कहाँ पहुँचाया
झूठ के मामले में दुनिया में 'नंबर 1' एक बनाया

Translate post

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

जो अपने गुनाह पर शायरी का परदा डालते हैं
वो सच में हैं कितने गुनाहगार ख़ुद भी जानते हैं

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

@ कानपुर

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

अच्छी रबड़ी, सच्ची रबडी!

छोटे कारोबार से ही अर्थव्यवस्था बड़ी बनती है।

#अकबरपुर

Translate post

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

@अंबेडकर नगर

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

आज अलीगढ़ में।

Translate post

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

अब अगली लाइन स्वास्थ्य मंत्री के दरवाज़े के बाहर लगेगी।

भाजपा राज में क्या कोई है जो पूछे कि बीमार का हाल क्या है?

Translate post

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh · 5d

भाजपा राज में बड़े-से-बड़े हाथ साफ़ कर रहे हैं, और छोटे भी कम नहीं हैं। वो भी हाथ साफ़ करने का कोई मौका नहीं छोड़ रहे हैं।

अपराधियों ने भाजपा सरकार में उप्र की क़ानून-व्यवस्था के बैग में हाथ डालकर सब कुछ खाली कर दिया है। भाजपा राज में बड़े-से-बड़े हाथ साफ़ कर रहे हैं, और छोटे Show more

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री श्यामदेव राय चौधरी जी का निधन अत्यंत हृदय विदारक है।

ईश्वर उनकी आत्मा को शांति एवं शोकाकुल परिजनों को यह दुःख सहने की शक्ति प्रदान करे।

Translate post

पंजीकृत डाक पंजीकरण संख्या GPO/LW/NP-300/2024-2026 कुल पृष्ठ : 48 डिस्पैच तिथि : 15, 16, 17

हिन्दू या मुस्लिम के अहसासात को मत छेड़िये

QR कोड स्कैन करें और वाट्स-एप चैनल से जुड़ें
/AkhiResh Yadav /Samajwadi Party

समाजवादी पार्टी

/samajwadiparty
www.samajwadiparty.in

हिन्दू या मुस्लिम के अहसासात को मत छेड़िये
अपनी कुरसी के लिए जज्बात को मत छेड़िये

हममें कोई हूण, कोई शक, कोई मंगोल है
दफ़्न है जो बात, अब उस बात को मत छेड़िये

ग़र ग़लतियाँ बाबर की थीं; जुम्मन का घर फिर क्यों जले
ऐसे नाजुक वक्त में हालात को मत छेड़िये

हैं कहाँ हिटलर, हलाकू, जार या चंगेज़ ख़ाँ
मिट गये सब, क़ौम की औक़ात को मत छेड़िये

छेड़िये इक जंग, मिल-जुल कर गरीबी के ख़िलाफ़
दोस्त, मेरे मजहबी नग्मात को मत छेड़िये

- अदम गोंडवी
(साभार: कविता कोश)